बाइबल अध्ययन किस प्रकार करें: भाग 1

हम कौन सी बाइबल का अध्ययन करते हैं...

"यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है। यहोवा के नियम विश्वासयोग्य हैं, साधारण लोगों को बुद्धिमान बना देते हैं। यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं। यहोवा की आज्ञा निर्मल है, वह आँखों में ज्योति ले आती है। यहोवा का भय पवित्र है, वह अनन्त काल तक स्थिर रहता है। यहोवा के नियम सत्य और पूरी रीति से धर्ममय हैं। वे तो सोने और कुन्दन से भी बढ़ कर मनोहर हैं। उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है। और उनके पालन करने से बड़ा ही प्रतिफल मिलता है।" (भजन संहिता 19:7-11)

- वचन सिद्ध है।
- वचन उचित है।
- वचन अच्छा है।
- वचन स्पष्ट है।
- वचन शाश्वत है।
- वचन सच्चा है।
- वचन उपलब्ध है।
  - अनुवादों की आवश्यकता...
    - संसार की कुल भाषाएं: 6,912
    - बाइबल कितनी भाषाओं में नहीं है: 2,286
  - अनुवादों के प्रश्न...
    - मुझे कौन सा अनुवाद प्रयोग करना चाहिए?
    - अनुवाद के पीछे प्रक्रिया को देखें।
  - अनुवाद की प्रक्रिया...
    - एक अलौकिक लेखक।
    - मानवीय लेखक।
    - मौलिक विषय-वस्तु।
    - मौलिक विषय वस्तु की प्रतिलिपी।
    - आलोचनात्मक विषय वस्तु।
    - अनुवादक या अनुवाद टीम।
    - अनुवाद।
    - समकालीन पाठक।
  - अनुवादों की श्रृंखला...
    - औपचारिक पद्धति: "शब्द के लिए शब्द"
    - कार्यात्मक पद्धति: "विचार के लिए विचार"
  - अंग्रेजी अनुवादों के लिए एक अनुशंसा...

- न्यू इन्टरनेशनल वर्जन
- इंगलिश स्टैन्डर्ड वर्जन
- न्यू अमेरिकन स्टैन्डर्ड बाइबल

हम बाइबल अध्ययन क्यों नहीं करते...

- "मैं समझ नहीं पाता हूँ कि बाइबल वास्तव में मेरे जीवन के लिए किस प्रकार से लागू है।"
- "मैंने कोशिश की, परन्तु मुझे पता नहीं है कि मैं बाइबल अध्ययन कैसे करूँ।"
- "मैं व्यवसायिक नहीं हूँ, क्या यह पासबान का काम नहीं है?"
- "मेरे पास समय नहीं है।"
- "मुझे तो यह भी नहीं पता कि क्या बाइबल सच्ची है।"
- "सच मानिये, यह तो मुझे केवल नीरस जान पड़ती है।

हमें बाइबल अध्ययन क्यों करना चाहिए...

- क्योंकि यह आत्मिक विकास के लिए अनिवार्य है।

"नये जन्मे हुये बच्चों की नाई निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ।" (1 पतरस 2:2)

  - हमें इसकी आवश्यकता है।
  - हमें यह चाहिए।
  - हम इसके बिना बढ़ नहीं सकते।

- क्योंकि यह आत्मिक परिपक्वता के लिए आवश्यक है।

"इसके विषय में हमें बहुत सी बातें कहनी हैं, जिनका समझाना भी कठिन है, क्योंकि तुम ऊँचा सुनने लगे हो। समय के विचार से तो तुम्हें गुरु हो जाना चाहिए था, क्या यह आवश्यक है कि कोई तुम्हें परमेश्वर के वचनों की आदि शिक्षा फिर से दे? तुम ऐसे हो गये हो कि तुम्हें अन्न के बदले अब तक दूध ही चाहिये। क्योंकि दूध पीने वाले बच्चे को तो धर्म के वचन की पहचान नहीं होती, क्योंकि वह बालक है। पर अन्न सयानों के लिये है, जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यास करते-करते भले बुरे में भेद करने के लिए पक्के हो गये हैं।" (इब्रानियों 5:11-14)

- क्योंकि यह आत्मिक प्रभाव के लिए आवश्यक है।

"हर एक पवित्र-शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाये।" (2 तीमुथियुस 3:16-17)

कौन बाइबल अध्ययन कर सकता है...

- कोई भी बाइबल अध्ययन कर सकते हैं।
- केवल वही, जिनमें यीशु मसीह का आत्मा है बाइबल समझ सकते हैं।

"हम ने संसार की आत्मा नहीं, परन्तु वह आत्मा पाया है जो परमेश्वर की ओर से है कि हम उन बातों को जानें, जो परमेश्वर ने हमें दी हैं। जिनको हम मनुष्यों के ज्ञान की सिखाई हुई बातों में नहीं, परन्तु आत्मा की सिखाई हुई बातों में आत्मिक बातें आत्मिक बातों से मिला-मिलाकर सुनाते हैं। परन्तु शारीरिक मनुष्य परमेश्वर के आत्मा की बातें ग्रहण नहीं करता क्योंकि वे उसकी दृष्टि में मूर्खता की बाते हैं, और न वह उन्हें जान सकता है क्योंकि उनकी जांच आत्मिक रीति से होती है।"

(1 कुरिन्थियों 2:12-14)

- आत्मा ने वचन <u>प्रेरित</u> किया है।
- आत्मा वचन को प्रज्वलित करता है।
- आत्मा हमें वचन में <u>शिक्षा देता है।</u>

तो, हम किस प्रकार बाइबल अध्ययन करें...

- प्रार्थना के साथ बाइबल अध्ययन करें।
  - हम बाइबल का अध्ययन कभी भी अकेले नहीं करते।
- बाइबल अध्ययन <u>नम्रता के साथ करें।</u>
  - क्या आप वास्तव में उसको जानना चाहते हैं?
- बाइबल अध्ययन <u>ध्यानपूर्वक करें</u>।
  - हम विषय वस्तु को उचित प्रकार से समझना चाहते हैं
- प्रसन्नता-पूर्वक बाइबल अध्ययन करें
  - बाइबल अध्ययन में व्यक्तिगत खोज की प्रसन्नता निहित है
- बाइबल अध्ययन <u>सादगी से</u>
  - आप (स्वयं), बाइबल तथा पवित्र-आत्मा...
  - अगर आप पढ़ सकते हैं, तो आप अध्ययन कर सकते हैं
- विश्वास सहित बाइबल अध्ययन करें
  - आपको ऐसा करने के लिए समर्थ बनाने के लिए, आप में पवित्र-आत्मा है
- निरन्तर बाइबल अध्ययन करें
  - प्रत्येक पुस्तक का प्रत्येक लेख का अध्ययन करने के लिए हमें तैयार होना आवश्यक है।
- बाइबल अध्ययन <u>परिश्रम के साथ करें</u>।
  - बाइबल अध्ययन का सीखना केवल एक रात में ही नहीं होता है।
- स्वेच्छा से बाइबल अध्ययन करें
  - हमेशा अपने हाथ में एक पुस्तिका तथा पेन रखें।
- बाइबल अध्ययन <u>व्यक्तिगत रुप में करें।</u>
  - आप इस पुस्तक के लेखक से प्रेम करने लगेंगे।
  - इस पुस्तक के अधिपत्य के नीचे आपको सच्चा जीवन मिलेगा।

बाइबल अध्ययन की हानिकारक पद्धतियाँ...

- भावनात्मक पद्धति
  - जो मेरे लिए सही <u>प्रतीत</u> होता है?
- आत्मिक पद्धति

- मेरे लिए क्या गूढ़ तथा निहित अर्थ है?

- व्यवहारिक पद्धति
  - मेरे लिये कौन सा कार्य उत्तम है?
- साधारण पद्धति
  - मेरे लिये इसका क्या अर्थ है?

बाइबल अध्ययन की एक विश्वसनीय पद्धति

एक धर्म विषयक यात्रा की कल्पना करें...

- उनके घरों को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
- उनके घरों को समझें: इसका क्या अर्थ है?
- उसको अपने साथ लायें: यह किस प्रकार लागू होता है?
- इसको अपने घर में विनियोग करें: मैं क्या करुँ?

हम वचन की यात्रा करें...

- उनके घरों को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
  - इसमें खोज सम्मिलित है।
  - विषय वस्तु जो बताती है उसे खोजें।
  - विषय का एक प्रश्न।
- उनके घरों को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - इसमें अर्थनिर्णय सम्मिलित है।
  - विषय वस्तु के प्रयोजन को खोजें
  - संदर्भ का एक प्रश्न
- इसे अपने साथ लाईये: यह किस प्रकार से सम्बन्ध बनाता है?
  - इसमें तात्पर्य सम्मिलित है
  - विषय वस्तु के अर्थ को खोजें
  - संबंध का एक प्रश्न
- इसे अपने घरों में विनियोग करें: मैं क्या करूं
  - इसमें सम्मिलित है अनुप्रयोग।
  - विषय वस्तु के परिवर्तन को खोजें
  - आचरण/व्यवहार का एक प्रश्न

बाइबल अध्ययन की एक विश्वसनीय पद्धति

बाइबल को पढ़ने के लिए दो परिवर्तनकारी प्रशिक्षण...

- सुनना सीखें
- देखना सीखें

सुनना सीखिये...

- सुनिये विचार मग्नता से।
  - बाइबल अध्ययन एक बुद्धिहीन कार्य नहीं है
- भली प्रकार सुनिये।
  - अगर हम बाइबल को समझना चाहते हैं, तो हमें इस पर प्रश्नों की बौछार करनी है।
  - कौन?
    - इसे लिखा?
    - मौलिक रूप से इसे पढ़ा?
    - मुख्य पात्र?
  - क्या?
    - विषय-वस्तु में हो रहा है?
    - चित्रण में गलत है?
    - लेखक कह रहा है?
  - कहाँ?
    - लेखक है?
    - मूल पाठक है?
    - विषय-वस्तु हो रही है?
  - कब?
    - लिखी गई थी?
    - क्या घटनाएँ हुई थीं?
  - क्यों?
    - क्या लेखक यह लिख रहा है?
    - क्या यह धर्मशास्त्र में है?
    - क्या घटनाएँ उसी प्रकार से हैं जिस प्रकार से वे हुई थीं?
    - क्या लेखक वही कह रहा है जो उसने कहा था?
- बार-बार सुनिये
  - लेख को बार-बार और फिर से एक बार पढ़िये... आपको इसका अर्थ मिलेगा।
- धीरज के साथ सुनिये
  - विषय वस्तु के साथ धैर्यशील रहें
  - स्वयं के साथ धैर्यशील रहें
- कल्पनात्मक रुप में सुनिये।
  - दृश्यों को देखें, सुगन्धों का आनन्द लें और भावों को अनुभव करें
- चिन्तनशील होकर सुनिये।
  - चिन्तन के लिए समय लें।
  - डीयटरिच बौंहोफेर: "जिस प्रकार से, आप उस व्यक्ति, जिसे आप प्रेम करते हैं, उसके शब्दों का विश्लेषण नहीं करते, परन्तु जिस प्रकार से भी वह आपसे कहे गये हैं वैसे ही स्वीकार कर लेते हैं, ठीक उसी प्रकार से आप धर्मशास्त्र के वचनों को भी स्वीकार करें और अपने हृदय में उस पर सोच-विचार करें, जैसा मरियम ने किया था। यही चिन्तन है।"

"व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित्त से कभी न उतरने पाये, इसी में दिन रात ध्यान दिये रहना, इसलिए कि जो कुछ उसमें लिखा है, उसके अनुसार करने की तू चौकसी करे, क्योंकि ऐसा ही करने से तेरे सब काम सफल होंगे और तू प्रभावशाली होगा।" (यहोशू 1:8)

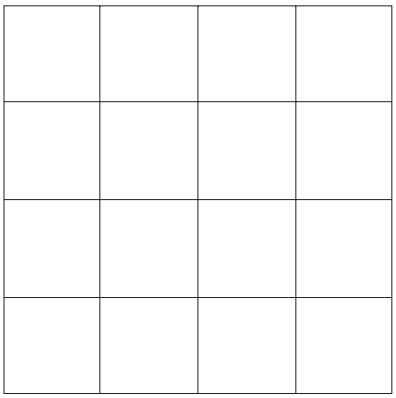
"क्या ही धन्य है वह पुरुष जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता और न पापियों के मार्ग पर खड़ा होता, न ठट्ठा करने वालों की मण्डली में बैठता है, परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है और उसकी व्यवस्था पर रात-दिन ध्यान करता रहता है।" (भजन संहिता 1:1-2)

"अहा! मैं तेरी व्यवस्था में कैसी प्रीति रखता हूँ, दिन-भर मेरा ध्यान
उसी पर रहता है।" (भजन संहिता 119:97)

- <u>उद्देश्य के साथ</u> सुनिये
  - परमेश्वर के हृदय के द्वारा, उसके वचन के माध्यम से, हम अपने जीवनों को परिवर्तित करना चाहते हैं।

देखना सीखिए...

- बाइबल पढ़ने की कला <u>देखने का कार्य</u> है।
- नीचे के चित्र में आप कितने चौरस देख सकते हैं।



- देखिए कि वचन किसे <u>महत्व देता है</u>
  - क्रियाएं
    - लेखक किस प्रकार लेख की क्रिया का वर्णन करता है?
    - क्या क्रिया भूतकाल है, <u>वर्तमानकाल</u>, या भविष्यकाल है?

"उसी में, जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मत के अनुसार सब कुछ करता है, पहले से ठहराए जाकर मीरास बनें।" (इफिसियों 1:11)

    - क्या क्रिया <u>आदेशसूचक</u> है?

"इसलिए तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्रात्मा के नाम से बपतिस्मा दो।" (मत्ती 28:19)

- क्या क्रिया सक्रिय है या <u>कर्मवाच्य</u>?

"यहोवा ने अब्राम से कहा, अपने देश और अपनी जन्मभूमि और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझसे एक बड़ी जाती बनाऊंगा और तुझे आशीष दूंगा, और तेरा नाम बड़ा करूंगा और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दे, उन्हें मैं आशीष दूंगा, और जो तुझे कोसे, उसे मैं श्राप दूँगा और धरती के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएंगे।" (उत्पत्ति 12:1-3)

"और दाखरस से मतवाले न बनो, क्योंकि इससे लुचपन होता है, पर आत्मा से परिपूर्ण हो जाओ।" (इफिसियों 5:18)

"जब तुम मसीह के साथ जिलाये गये हो, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिनी ओर बैठा है।" (कुलुस्सियों 3:1)

- <u>स्थान/जगह</u>
  - क्या लेखक एक निश्चित प्रसंग, पात्र, घटना इत्यादि की ओर ध्यान केन्द्रित कर रहा है?
  - उत्पत्ति 1-11, 12-50
  - मत्ती
    - 1,062 पदों में से, कम से कम <u>342</u>, इनमें से (पुस्तक का एक तिहाई) यीशु मसीह की शिक्षाओं के बारे में है।
  - इफिसियों
    - 1-3: उद्धार की व्याख्या
    - 4-6: उद्धार का अनुप्रयोग
- <u>उद्देश्य</u> कथन
  - क्या लेखक यह वर्णन करता है कि वह कुछ क्यों कहता है या कुछ क्यों होता है?
  - उस, ताकि, को, के लिए– को देखें।

"सुनो, मैंने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा के अनुसार तुम्हें विधि तथा नियम सिखाये हैं, कि जिस देश के अधिकारी होते जाते हो उसमें तुम उनके अनुसार चलो। सो तुमको उनको धारण करना तथा मानना, क्योंकि और देशों के लोगों के सामने तुम्हारी बुद्धि तथा समझ इसी से प्रगट होगी, अर्थात् वह इन सब विधियों को सुनकर कहेंगे कि निश्चय यह बड़ी जाति बुद्धिमान तथा समझदार है।" (व्यवस्थाविवरण 4:5-6)

"मैंने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, ताकि तेरे विरुद्ध पाप न करूँ" (भजन संहिता 119:11)

"क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाये।" (यूहन्ना 3:16)

"तुमने मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना है और तुम्हें ठहराया ताकि तुम जाकर फल लाओ और तुम्हारा फल बना रहे कि तुम मेरे नाम से जो कुछ पिता से माँगो, वह तुम्हें दे।" (यूहन्ना 15:16)

"यीशु ने और भी बहुत चिन्ह चेलों के सामने दिखाए, जो इस पुस्तक में लिखे नहीं गये। परन्तु यह इसलिए लिखे गये हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीत पाओ।" (यूहन्ना 20:30-31)

- अनुक्रम
  - क्या लेखक किसी चीज को एक निश्चित क्रम में रखने के द्वारा उसे कूटनीतिक महत्व दे रहा है?

मत्ती 10:2-4	**मरकुस 3:13-19**	**लूका 6:12-16**	**प्रेरितों के काम 1:12-14**
शमौन पतरस	शमौन पतरस	शमौन पतरस	पतरस
अन्द्रियास	याकूब	अन्द्रियास	यूहन्ना
याकूब	यूहन्ना	याकूब	याकूब
यूहन्ना	अन्द्रियास	यूहन्ना	अन्द्रियास
फिलिप्पुस	**फिलिप्पुस**	**फिलिप्पुस**	**फिलिप्पुस**
बरतुलमै	बरतुल्मै	बरतुलमै	थोमा
थोमा	मत्ती	मत्ती	बरतुलमै
मत्ती	थोमा	थोमा	मत्ती
याकूब / तद्दै	**याकूब / तद्दी**	**याकूब**	**याकूब**
शमौन कनानी	शमौन कनानी	शमौन कनानी	यहूदा / याकूब
यहूदा इस्करियोती	यहूदा इस्करियोती	यहूदा / याकूब	(मथियास)

- अतिश्योक्ति
  - क्या लेखक स्वेच्छा से या <u>प्रभावशाली</u> बलपूर्वक किसी चीज को बढ़ा-चढ़ा कर कह रहा है?

"मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा के कारण हर समय
खेदित रहता है।" (भजन संहिता 119:20)

"मैंने और कलीसियाओं को लूटा ताकि तुम्हारी सेवा करूँ।"
(2 कुरि. 11:8)

"हे अन्धे अगुवों! तुम मच्छर को तो छान डालते हो,
परन्तु ऊँट को निगल जाते हो।" (मत्ती 23:24)

- एक-दूसरे से मिलना या काटना
  - क्या लेखक (विशेषकर पुराने नियम में) एक मुख्य विचार को लेख में एक समान्तर रचना द्वारा प्रकाशमय करता है?

भजन संहिता 76:1

- यहूदा में
  - परमेश्वर जाना गया है

- उसका नाम महान है
- इस्राएल में

उत्पत्ति 3

- पाप का समावेश (3:1-7)
  - पुरुष का सामना (3:8-12)
    - स्त्री का सामना (3:13)
      - सर्प से सामना तथा प्रतिज्ञा (3:14-15)
    - स्त्री को प्रतिज्ञा (3:16)
  - पुरुष को प्रतिज्ञा (3:17-19)
- पाप का परिणाम (3:20-24)

उत्पत्ति 11

- सम्पूर्ण सृष्टि (1)
  - एक ही भाषा थी (1)
    - शिनार में बस गये (2)
      - आओ हम ईंटे बनायें (3)
        - आओ हम बनायें (4)
          - एक नगर गुम्मट के साथ बनायें (4)
            - परन्तु यहोवा नीचे उतर आया (5)
              - उस नगर तथा गुम्मट को देखने के लिए (5)
            - जो वे लोग बना रहे थे (5)
      - आओ हम नीचे जाकर उनकी भाषा में गड़बड़ी डालें (7)
        - बाबुल- क्योंकि वहाँ (9)
    - भाषा की सारी गड़बड़ी परमेश्वर ने वहीं डाली (9)
  - सारी पृथ्वी (9)

पहला तथा दूसरा राजा

- दो अध्याय: परिचय तथा उन्नति (1 राजा 1-2)
  - नौ अध्याय: एक राज्य– सुलैमान (1 राजा 3-11)
    - उनतीस अध्याय: विभाजित राज्य (1 राजा 12-2 राजा 17)
  - छ: अध्याय: एक राज्य– योशिय्याह (2 राजा 18-23)
- दो अध्याय: निष्कर्ष और पतन (2 राजा 24-25)

- देखिए कि वचन क्या <u>दोहराता है</u>
  - क्या लेखक स्वेच्छा से, विषयय वस्तु में कुछ दोहराता है?
  - शब्दावली, उपवाक्य, खंड
    - भजन संहिता 136– उसकी करुणा सदा की है
    - मत्ती 5:34-6:34– परमेश्वर हमारा पिता है

"परमेश्वर जो दया का पिता और सब प्रकार की शान्ति का परमेश्वर है, वह हमारे सब क्लेशों में शान्ति देता है ताकि हम उस शान्ति के कारण उन्हें भी शान्ति दे सकें जो किसी प्रकार के क्लेश में हों। क्योंकि जैसे मसीह के दु:ख हमको अधिक होते हैं, वैसे ही हमारी शान्ति भी मसीह के द्वारा अधिक होती है। यदि हम क्लेश पाते हैं, तो यह हमारी शान्ति तथा उद्धार के लिये है और यदि शान्ति पाते हैं तो यह तुम्हारी शान्ति के लिए है, जिसके प्रभाव से तुम धीरज के साथ उन क्लेशों को सह लेते हो, जिन्हें हम भी सहते हैं। और हमारी आशा तुम्हारे विषय में दृढ़ है, क्योंकि हम जानते हैं कि तुम जैसे दुखों के वैसे ही शान्ति के भी सहभागी हों।" (2 कुरि. 1:3-7)

"तुम न तो संसार से और न संसार की वस्तुओं से प्रेम रखो, यदि कोई संसार से प्रेम रखता है तो उसमें पिता का प्रेम नहीं। क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा, आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार की ओर से है। संसार और उसकी अभिलाषाएं दोनों मिटते जाते हैं, पर जो परमेश्वर की इच्छा पर चलता है वह सर्वदा बना रहेगा।" (1 यूहन्ना 2:15-17)

- पात्र
  - बरनबा प्रेरितों के काम में 4:36, 9:27, 11:22, 15:36-39
- आकृति
  - फिरौन अपना मन कठोर करता है (निर्गमन 7:13, 14, 22; 8:11, 15, 28; 9:7, 34, 35; 13:5)
  - परमेश्वर फिरौन के हृदय को कठोर करता है (निर्गमन 4:21; 7:3; 9:12; 10:1, 20, 27; 11:10; 14:4, 8, 17)
- नये नियम में पुराने नियम के पद्यांशों का प्रयोग
  - मत्ती 5:21-47– "तुमने सुना है कि ऐसा कहा गया था...."
- देखिये कि वचन क्या <u>जोड़ता है।</u>
  - क्या लेखक निश्चित परिस्थितियों, विचारों या व्यक्तियों में निश्चित सम्बन्ध स्थापित करता है?
- संयोजक
  - के लिये, और, परन्तु, इसलिए, तब से, क्योंकि ..... को देखें।

"इसलिए हे भाइयों, मैं तुमसे परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर विनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित और पवित्र और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ, यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।" (रोमियों 12:1)

"इस कारण जबकि गवाहों का एक बड़ा बादल हमको घेरे हुये है, तो आओ हर एक रोकने वाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, वह दौड़ जिसमें हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।" (इब्रानियों 12:1)

"क्योंकि परमेश्वर ने हमें भय की नहीं पर सामर्थ और प्रेम और संयम की आत्मा दी है। इसलिये हमारे प्रभु को गवाही से और मुझसे जो उसका कैदी हूँ, लज्जित न हो, पर उस परमेश्वर की सामर्थ के अनुसार सुसमाचार के लिए मेरे साथ दु:ख उठा।" (2 तीमु. 1:7-8)

- पूर्वसर्ग
  - के द्वारा, से, साथ, अन्दर, ऊपर, के माध्यम से या को..... देखें।

"मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझमें जीवित है, और मैं शरीर में अब जो जीवित हूँ तो केवल उस विश्वास से जीवित हूँ, जो परमेश्वर के पुत्र पर है जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए अपने आपको दे दिया" (गलातियों 2:20)

"सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने पुत्र यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक, जिसमें हम बने हैं, हमारी पहुँच भी हुई और परमेश्वर की महिमा की आशा पर घमण्ड करें।" (रोमियों 5:1-2)

- सामान्य तथा विशिष्ट
  - उन परिस्थितियों को देखें जब एक लेखक एक सामान्य विचार का समावेश करता है और फिर विशिष्ट सहायक विचारों के द्वारा एक व्याख्या देता है (या इसके विपरीत)
  - सामान्य से विशिष्ट की ओर: गलातियों 5:16-23

"पर मैं कहता हूँ, आत्मा के अनुसार चलो, तो शरीर की लालसा किसी रीति से पूरी न करोगे। क्योंकि शरीर आत्मा के विरोध में है, और आत्मा शरीर के विरोध में लालसा करती है, और ये एक दूसरे के विरोधी हैं, इसलिए कि जो तुम करना चाहते हो वह न करने पाओ। और यदि तुम आत्मा के चलाए चलते हो, तो व्यवस्था के अधीन न रहें। शरीर के काम तो प्रगट हैं, अर्थात् व्यभिचार, गन्दे काम, लुचपन, मूर्ति-पूजा, टोना, बैर, झगड़ा, ईर्ष्या, क्रोध, विरोध, फूट, विधर्म, डाह, मतवालापन, लीला क्रीड़ा और इनके ऐसे और काम है, इनके विषय में मैं तुमको पहले से कह देता हूँ, जैसा पहले कह भी चुका हूँ, कि ऐसे-ऐसे काम करने वाले परमेश्वर के राज्य के वारिस न होंगे। पर आत्मा का फल प्रेम, आनन्द, मेल, धीरज, कृपा, भलाई, विश्वास, नम्रता और संयम है और ऐसे कामों के विरोध में कोई भी व्यवस्था नहीं।" (गलातियों 5:16-23)

  - विशिष्ट से सामान्य की ओर: 1 कुरिन्थियों 13:1-13
- प्रश्न तथा <u>उत्तर</u>
  - उन प्रश्नों को देखें जिनका उत्तर दिया गया है और उन अलंकारिक प्रश्नों को भी जिनमें उत्तर अन्तर्निहित है।

"वह कौन है जो अज्ञानता की बातें कहकर युक्ति को बिगाड़ना चाहता है? पुरुष की नाईं अपनी कमर बान्ध ले, क्योंकि मैं तुझसे प्रश्न करता हूँ और तू मुझे उत्तर दे।" (अय्यूब 38:2-3)

"पुत्र पिता का, और दास स्वामी का आदर करता है। यदि मैं पिता हूँ, तो मेरा आदर मानना कहाँ है? और यदि मैं स्वामी हूँ तो मेरा भय मानना कहाँ है? सेनाओं का यहोवा, तुम याजकों से भी जो मेरे नाम का अपमान करते हों, यही बात पूछता है। परन्तु तुम पूछते हो कि हमने किस बात में तेरे नाम का अपमान किया है?" (मलाकी 1:6)

"फिर चेलों के पास आकर उन्हें सोने पाया और पतरस से कहा, क्या तुम मेरे साथ एक घड़ी भी न जाग सके?" (मत्ती 26:40)

"सो यहूदी की क्या बड़ाई, या खतने का क्या लाभ?" (रोमियों 3:1)

"सो हम क्या कहें, कि हमारे शारीरिक पिता इब्राहीम को क्या प्राप्त हुआ?" (रोमियों 4:1)

"सो हम क्या कहें? क्या हम पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?" (रोमियों 6:1)

"हे भाइयों, क्या तुम नहीं जानते, कि जब तक मनुष्य जीवित रहता है, तब तक उस पर व्यवस्था की प्रभुता रहती है?" (रोमियों 7:1)

- कारण तथा <u>प्रभाव</u>
  - लेखक द्वारा लिखे गये विशेष कारणों को देखें जिनका परिणाम एक विशिष्ट प्रभाव या विविध प्रभाव होते हैं।

"कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है।" (नीतिवचन 15:1)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु यीशु मसीह में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23)

"उसी दिन यरूशलेम की कलीसिया पर बड़ा उपद्रव होने लगा और प्रेरितों को छोड़ सबके सब यहूदिया और सामरिया देशों में तितर-बितर हो गये।" (प्रेरितों के काम 8:1)

- माध्यम
  - जब विषय वस्तु में कुछ होता है, तो उस माध्यम को देखें जिसके द्वारा वह परिणाम तथा प्रक्रिया हुई।

"जवान अपनी चाल को किस प्रकार से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।" (भजन संहिता 119:9)

"क्योंकि यदि तुम शरीर के अनुसार दिन काटोगे तो मरोगे, यदि आत्मा से देह की क्रियाओं को मारोगे तो जीवित रहोगे। इसलिए कि जितने लोग परमेश्वर के आत्मा के चलाए चलते हैं, वे ही परमेश्वर के पुत्र हैं।" (रोमियों 8:13-14)

- परिस्थितियाँ
  - उन विशिष्ट वाक्यांशों को देखें जो उन विशिष्ट परिस्थितियों को दर्शाती है जिनके द्वारा एक इच्छित प्रक्रिया होती है।
  - अगर (परिस्थिति) और फिर (निष्कर्ष) को देखें।

"यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की सब आज्ञाएं, जो मैं आज तुझे सुनाता हूँ, चौकसी से पूरी करने को चित्त लगाकर उसकी सुने, तो वह तुझे पृथ्वी की सब जातियों में श्रेष्ठ करेगा।" (व्यवस्थाविवरण 28:1)

"सो यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है, पुरानी बातें बीत गई हैं, देखो वे सब नई हो गई हैं।"
(2 कुरि. 5:17)

"यदि हम कहें कि उसके साथ हमारी सहभागिता है और फिर अन्धकार में चलें तो हम झूठे हैं और सत्य पर नहीं चलते।"
(1 यूहन्ना 1:6)

- सूचियाँ
  - दो या अधिक सूचित वस्तुओं के किसी उदाहरण को देखें और देखें कि किस प्रकार और क्यों वह एक निश्चित रूप में सूचीबद्ध हैं।

"क्योंकि जो कुछ संसार में है, अर्थात् शरीर की अभिलाषा और आँखों की अभिलाषा और जीविका का घमण्ड, वह पिता की ओर से नहीं, परन्तु संसार ही की ओर से है।"
(1 यूहन्ना 2:16)

"इसलिये अपने उन अंगों को मार डालो जो पृथ्वी पर हैं; अर्थात व्यभिचार, अशुद्धता, दुष्कामना, बुरी लालसा और लोभ को जो मूर्ति-पूजा के बराबर है। इन ही के कारण परमेश्वर का प्रकोप आज्ञा न मानने पर पड़ता है और तुम भी जब इन बुराईयों में जीवन बिताते थे, तो इन्हीं के अनुसार चलते थे। पर अब तुम भी इन सबको अर्थात क्रोध, रोष, बैर-भाव, निन्दा और मुँह से गालियाँ बकना ये सब छोड़ दो।"
(कुलुस्सियों 3:5-8)

- सर्वनाम
  - देखिए कि किस प्रकार सर्वनाम, लेख में, सम्बन्धों को जोड़ता है

"हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो कि उसने हमें मसीह में स्वर्गीय स्थानों में सब प्रकार की आशीष दी है। जैसा उसने हमें जगत की उत्पत्ति से पहले उसमें चुन लिया, कि हम उसके निकट प्रेम में पवित्र तथा निर्दोष हों। और अपनी इच्छा के अनुसार हमें अपने लिये पहले से ठहराया कि यीशु मसीह के द्वारा हम उसके लेपालक पुत्र हों, कि उसके उस अनुग्रह की महिमा की स्तुति हो, जिसे उसने

हमें उस प्यारे में सेंत-मेंत दिया। हमको उसमें उसके लहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है, जिसे उसने अपनी इच्छा का भेद उस सुमति के अनुसार हमें बताया जिसे उसने अपने आप में ठान लिया था। कि समयों के पूरे होने का ऐसा सम्बन्ध हो कि जो कुछ स्वर्ग में है, जो कुछ पृथ्वी पर है, सब कुछ वह मसीह में एकत्र करे। उसी में जिसमें हम भी उसी की मनसा से जो अपनी इच्छा के मन के अनुसार सब कुछ करता है पहले से ठहराए जाकर मीरास बनें। कि हम जिन्होंने पहले से मसीह पर आशा रखी थी, उसी की महिमा की स्तुति के कारण हों। और उसी में तुम भी जब तुमने सत्य का वचन सुना, जो तुम्हारे उद्धार का सुसमाचार है और जिस पर तुमने विश्वास किया, प्रतिज्ञा किये हुये, पवित्र-आत्मा की छाप लगी। वह उसके मोल लिये हुए कि छुटकारे के लिए हमारी मीरास का बयाना है, कि उसकी महिमा की स्तुति हो।" (इफिसियों 1:3-14)

"और जब वे प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह की पहचान के द्वारा संसार की नाना प्रकार की अशुद्धता से बच निकले और फिर उनमें फंस कर हार गये, तो उनकी पिछली दशा पहले से भी बुरी हो गई।" (2 पतरस 2:20)

- मुख्य स्थानान्तरण
  - आप जब लम्बे (बड़े) लेखों को पढ़ते हैं, तो उन आलोचनात्मक स्थानों को देखें जहाँ लेख एक नया <u>मोड़</u> लेता हुआ प्रतीत होता है।
  - 2 शमूएल 11-12

"फिर प्रभु के एक स्वर्गदूत ने फिलिप्पुस से कहा, उठकर दक्खिन की ओर उस मार्ग पर जा, जो यरूशलेम से अज्जाह को जाता है और जंगल में है।" (प्रेरितों के काम 8:26)

"क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई प्राणी उसके सामने धर्मी न ठहरेगा, इसलिए कि व्यवस्था द्वारा पाप की पहचान होती है। वह अब बिना व्यवस्था परमेश्वर की वह धार्मिकता प्रगट हुई है, जिसकी गवाही व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता देते हैं।" (रोमियों 3:20-21)

"कलीसिया में और मसीह यीशु में उसकी महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। मैं जो प्रभु में बन्धुआ हूँ, तुमसे विनती करता हूँ कि जिस बुलाहट से बुलाये गये हो, उसके योग्य बनो।" (इफिसियों 3:21-4:1)

- वचन को देखें <u>जो तुलना करता है</u>
  - क्या लेखक निश्चित वस्तुओं, विचारों या व्यक्तियों की दूसरों से तुलना करता है?
  - ऊपमा
    - दो चीजें जो भिन्न हैं, उनकी <u>स्पष्ट</u> तुलना को देखें
    - जैसे, उसी तरह..... को देखें।

"जैसे हिरणी नदी के जल के लिए हांफती है, वैसे ही
हे परमेश्वर मैं तेरे लिए हांफता हूँ।"
(भजन संहिता 42:1)

"जैसे मूसा ने जंगल में सांप को ऊंचे पर चढ़ाया, उसी तरह अवश्य है कि मनुष्य का पुत्र भी ऊंचे पर चढ़ाया जाये।" (यूहन्ना 3:14)

"नये जन्म हुये बच्चों की तरह, निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो,
ताकि उसके द्वारा उद्धार में बढ़ते जाओ।"
(1 पतरस 2:2)

- रूपक
  - दो चीजों के बीच, जो भिन्न हैं <u>विवक्षित</u> तुलना को देखें।
  - जैसे, उसी तरह प्रयोग किये बिना तुलना

"जब हम अपने वश में करने के लिए घोड़ों के मुँह में लगाम लगाते हैं, तो हम उनकी सारी देह को फेट सकते हैं। देखो, जहाज भी, यद्यपि ऐसे बड़े होते हैं और प्रचण्ड वायु से चलाए जाते हैं, तौभी एक छोटी सी पतवार के द्वारा मांझी की इच्छा के अनुसार घुमाए जाते हैं। वैसे ही जीभ भी एक छोटा सा अंग है और बड़ी-बड़ी डींगें मारती है, देखो थोड़ी सी आग से कितने बड़े वन में आग लग जाती है। जीभ भी एक आग है। जीभ हमारे अंगों में अधर्मों का एक लोक है, और सारी देह पर कलंक लगाती है,
और भव चक्र में आग लगा देती है और नरक
कुण्ड की आग से जलती रहती है।"
(याकूब 3:3-6)

- रूपक कथा
  - उन उदाहरणों को देखें जहाँ लेखक एक विशिष्ट <u>प्रतीक</u> का प्रयोग या तुलना का प्रयोग एक गूढ़ अर्थ को प्रगट करने के लिए करता है।

"तुम जो व्यवस्था के अधीन होना चाहते हो, क्या तुम व्यवस्था की नहीं सुनते? यह लिखा है कि इब्राहीम के दो पुत्र हुये, एक दासी से और एक स्वतंत्र स्त्री से। परन्तु जो दासी से हुआ, वह शारीरिक रीति से जन्मा, और जो स्वतन्त्र स्त्री से हुआ वह प्रतिज्ञा के अनुसार जन्मा। इन बातों में दृष्टान्त है– ये स्त्रियां मानों दो वाचाएं हैं, एक तो सीना पहाड़ की जिससे दास ही उत्पन्न होते हैं और वह हाजिरा है। हाजिरा मानो अरब का सीना पहाड़ है और आधुनिक यरूशलेम उसके तुल्य है क्योंकि वह अपने बालकों समेत दासत्व में है। पर ऊपर की यरूशलेम स्वतन्त्र है, और वह हमारी माता है। क्योंकि लिखा है कि हे बांझ कि तू तो नहीं जानती, आनन्द कर, तू जिसको पीड़ाएं नहीं उठती गला खोल-खोल कर जय-जयकार कर, क्योंकि त्यागी हुई की सन्तान सुहागिन की सन्तान से भी अधिक है। हे भाइयों, हम इसहाक की नाईं प्रतिज्ञा की सन्तान हैं। और जैसा उस समय शरीर के अनुसार जन्मा हुआ आत्मा के अनुसार जन्मे हुये को सताता था, वैसा ही अब भी होता है। परन्तु पवित्र-शास्त्र क्या कहता है? दासी व उसके पुत्र को निकाल दे, क्योंकि दासी का पुत्र स्वतन्त्र स्त्री के पुत्र के साथ उत्तराधिकारी नहीं होगा। इसलिए हे भाइयों, हम दासी के नहीं, परन्तु स्वतन्त्र
स्त्री की सन्तान हैं।" (गलातियों 4:21-31)

- प्रकार
  - उन उदाहरणों को देखें जहाँ लेखक एक प्रतीकात्मक चित्रण का प्रयोग <u>भविष्य</u> में कुछ लाने के लिए प्रयोग करता है।

तौभी आदम से लेकर मूसा तक मृत्यु ने उन लोगों पर राज्य किया जिन्होंने उस आदम के अपराध की नाई जो उस आने वाले का चिन्ह है, पान न किया।" (रोमियों 5:14)

"ऐसा लिखा भी है, कि प्रथम मनुष्य अर्थात् आदम, जीवित प्राणी बना और अन्तिम आदम, जीवनदायक आत्मा बना।" (1 कुरि. 15:45)

- देखिये कि वचन <u>वैषम्य दिखलाना है</u>
  - क्या लेखक विशेष वस्तुओं, विचारों या व्यक्तियों की तुलना एक दूसरे से करता है।
  - परन्तु को देखें

"जो कंगाल पर अन्धेर करता है, वह उसके कर्ता की निन्दा करता है, परन्तु जो दरिद्र पर अनुग्रह करता है वह उसकी महिमा करता है।" (नीतिवचन 14:31)

"क्योंकि पाप की मजदूरी तो मौत है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।" (रोमियों 6:23)

  - तुलनात्मक रूपकों को खोजें
    - दो चीजों के बीच अन्तर्निहित तुलना को देखें

"तुम में से कौन ऐसा पिता होगा, कि जब उसका पुत्र रोटी मांगे तो उसे पत्थर दे, या मछली मांगे, वो उसे सांप दे? या अण्डा मांगे ये उसे बिच्छू दे? सो जब तुम बुरे होकर अपने लड़के वालों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो स्वर्गीय पिता अपने मांगने वालों को पवित्र-आत्मा क्यों न देगा" (लूका 11:11-13)

- देखे कि वचन किस प्रकार <u>बात करता है</u>
  - क्या लेखक विषय वस्तु में निश्चित भावों, अनुभूतियों को प्रगट करने के लिए निश्चित शब्दों, चित्रणों, वाक्यांशों या साहित्यिक साधनों का प्रयोग करता है।
  - भावनाएं
    - उन शब्दों को देखें जो विशिष्ट <u>भावनाओं</u> या भावनाओं को प्रकट करता है।

"मैंने सोचा था, मैं कैसे तुझे लड़कों में गिनकर वह मनभावना देश दूँ जो सब जातियों के देशाों का शिरोमणि है। और मैंने सोचा कि तू मुझे पिता कहेगी और मुझसे फिर न भटकेगी। इसमें तो सन्देह नहीं कि जैसे विश्वासघाती स्त्री अपने प्रिय से मन फेर लेती है, वैसे ही हे इस्राएल के घराने, तू मुझसे फिर गया है, यहोवा की यह वाणी है।" (यिर्मयाह 3:19-20)

"हे भाइयों, मैं तुमसे विनती करता हूँ कि तुम मेरे समान हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूँ, तुमने मेरा कुछ बिगाड़ा नहीं। पर तुम जानते हो कि पहले पहल मैंने शरीर की निर्बलता के कारण तुम्हें सुसमाचार सुनाया। और तुमने मेरी शारीरिक दशा को जो तुम्हारी परीक्षा का कारण थी, तुच्छ न जाना, न उससे घृणा की, और परमेश्वर के दूत वरन मसीह के समान मुझे ग्रहण किया। सो वह तुम्हारा आनन्द मनाना कहाँ गया? मैं तुम्हारा गवाह हूँ, कि यदि हो सकता, वो तुम अपनी आँखें भी

निकाल कर मुझे दे देते। तो क्या तुम से सच बोलने के कारण मैं तुम्हारा बैरी बन गया हूँ।" (गलातियों 4:12-16)

- मनोभाव
  - जब लेखक लिखता है, तो उसके व्यवहार के प्रमाणों को देखें

"प्रभु में आनन्दित रहो, मैं फिर कहता हूँ आनन्दित रहो।" (फिलिप्पियों 4:4)

- अनुभूति
  - व्यक्तिगत भावात्मक शब्दावली तथा मनोभावों के उदाहरणों के देखने के बाद, विषय-वस्तु और / या की सम्पूर्ण अनुभूति को खोजना जारी रखें।

"उसकी रोष की छड़ी से दु:ख भोगने वाला पुरुष मैं ही हूँ, वह मुझे उजियाले में नहीं, अन्धियारे में ही चलाता है। उसका हाथ दिन भर मेरे ही विरुद्ध उठता रहता है। उसने मेरा माँस तथा चमड़ा गला दिया है और मेरी हड्डियों को तोड़ दिया है। उसने मुझे रोकने के लिए किला बनाया और मुझको कठिन दु:ख और श्रम से घेरा है। उसने मुझे बहुत दिन के मरे हुये लोगों के समान अन्धेरे स्थानों में बसा दिया है।" (विलापगीत 3:1-6)

"हे साँपों, हे कटैतों के बच्चों, तुम नरक के दण्ड से क्योंकर बचोगे? इसलिये देखो, मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और बुद्धिमानों और शास्त्रियों को भेजता हूँ और तुम उनमें से कितनों को मार डालोगे। जिससे धर्मी हाबिल से लेकर बिरिक्याह के पुत्र जकर्याह तक जिसे तुमने मन्दिर और वेदी के बीच में मार डाला था, जितने धर्मियों का लहू पृथ्वी पर बहाया गया है, वह सब तुम्हारे सिर पर पड़ेगा।" (मत्ती 23:33-35)

"हे निर्बुद्धि गलातियों, किसने तुम्हें मोह लिया है? तुम्हारी तो मानों आँखों के सामने यीशु मसीह क्रूस पर दिखाया गया। मैं तुमसे केवल यह जानना चाहता हूँ कि तुमने आत्मा को क्या व्यवस्था के कामों से, या विश्वास के समाचार से पाया? क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि हो, कि आत्मा की रीति पर आरम्भ करके अब शरीर की रीति पर अन्त करोगे? क्या तुमने इतना दु:ख यों ही उठाया? परन्तु कदाचित व्यर्थ नहीं।" (गलातियों 3:1-4)

सम्पूर्ण अवलोकन

- व्यक्तिगत पदों का अवलोकन
- पद्यांशों का अवलोकन
- पूर्ण उपदेश का अवलोकन
- और याद रखिए, <u>धीरज रखें!</u>

प्रक्रिया में अवलोकन...

परन्तु जब पवित्र-आत्मा तुम पर आयेगा तब तुम सामर्थ पाओगे, और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" (प्रेरितों के काम 1:8)

उनके घर को समझें:

इसका क्या अर्थ है?

अन्वेषण से स्पष्टीकरण की ओर...

- विषय वस्तु क्या कहती है से विषय वस्तु के अर्थ है, तक
- विषय वस्तु के प्रश्नों से संदर्भों के प्रश्नों तक

संदर्भ, संदर्भ, संदर्भ...

- संदर्भ की परिभाषा...
  - संदर्भ= वह जो विषय-वस्तु से मिलता है
- संदर्भ द्वारा उत्पन्न दुविधा...
  - बाइबल शाश्वत विषय वस्तु का संचार करती है
  - बाइबल विशेष विषय वस्तु द्वारा संचार करती है
  - हम तब और वहाँ से अब और यहाँ तक कैसे जायें?
- संदर्भ के प्रति समर्पण
  - हम स्वयं को लेखक की जगह रखने के लिए कार्य करते हैं और उसके मूल अर्थ को निश्चित करने के लिए कार्य करते हैं।
  - बाइबल विषयक लेख का अर्थ वह कभी नहीं होगा जो उसका अभिप्राय नहीं है
  - संदर्भ अर्थ बनाता है
  - संदर्भ का नियम: संदर्भ नियम!
- संदर्भों की विविधता
  - हमारा संदर्भ
  - उनका संदर्भ

हमारे संदर्भ को समझें...

- हमारा पूर्व ज्ञान...
  - हमारे सारे पूर्व सम्बन्धित विचार जो हम जाने या अनजाने में विषय-वस्तु में लाते हैं।
  - हमारा घमण्ड
    - सुनने से पहले गर्व जानता है
  - हमारा कार्यसूची
    - दो विकल्प:
      विषय वस्तु के प्रयोजन को समझें।
      विषय वस्तु के प्रयोजन के नीचे घुटने टेकें।
  - हमारी चिरपरिचितता
    - किसी लेख को इसलिए छोड़ना नहीं है, क्योंकि वो परिचित है
  - हमारी संस्कृति
    - भाषा

- रीति-रिवाज
- कथाएं
- परिवार
- मूल्य
- अर्थव्यवस्था
- राजनीति
- जातीयता
- लिंग
- धर्म
- कला
- दृश्य

➢ हमारा उद्देश्य: काल्पनिकता को कम करना है
- परन्तु पूर्णतया नहीं...

■ हमारी पूर्व धारणाएं:
➢ बाइबल प्रेरित है
➢ बाइबल विश्वसनीय है
➢ बाइबल एकीकृत है
➢ बाइबल विविध है
➢ बाइबल अलौकिक है
- इसलिए बाइबल में तनाव है और रहस्य है।

➢ बाइबल अर्थपूर्ण है

■ तो हम उनके प्रसंग को भली-भांति कैसे समझ सकते हैं?

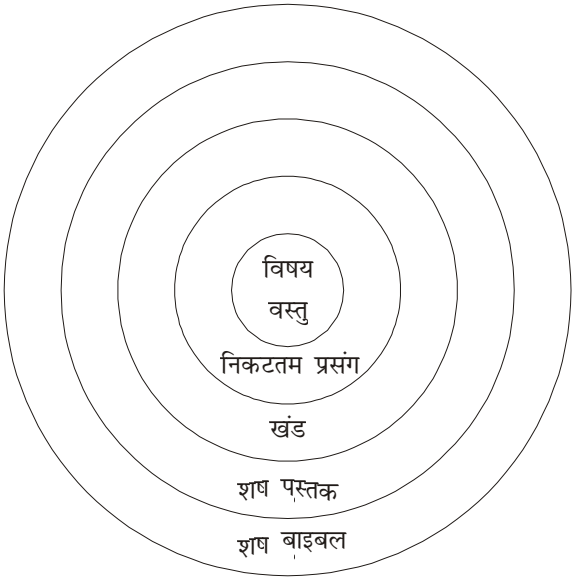
उनके प्रसंग पर विचार करें...

■ कभी मत भूलिये कि धर्मशास्त्र पहले दूसरे लोगों के लिए परमेश्वर का वचन था, यह हमारे लिये परमेश्वर का वचन हो गया।
➢ परमेश्वर ने उनके लिए बहुत गहराई से सोचा
➢ परमेश्वर हमारे बारे में बहुत गहराई से सोचता है

■ साहित्यिक प्रसंग:
➢ शैलियाँ
- बाइबल के लेख की विभिन्न प्रकार की शैलियाँ
- विभिन्न शैलियों में शामिल नियम को हमें जानना जरूरी है।
- पुराना नियम...
  विवरणात्मक
  व्यवस्था
  कविता
  भविष्यद्वक्ता
  ज्ञान
- नया नियम

पत्रियाँ
सुसमाचार
दृष्टान्त
प्रेरितों के काम
प्रकाशितवाक्य

- <u>व्याकरण</u>
  - व्यक्तिगत शब्द, वाक्यांश, उपवाक्य- सबका प्रसंग में अर्थ है
- परिवेश
  - बाइबल का एक संकलित संदेश है जिसमें पूर्ण, इसके विभिन्न भागों के जोड़ से ज्यादा बड़ा है।



"क्योंकि जहाँ दो या तीन मेरे नाम से इकट्ठे होते हैं,
वहाँ मैं उनके बीच में होता हूँ।" (मत्ती 18:20)

"जो जय पाये, मैं उसे अपने साथ अपने सिंहासन पर बैठाऊंगा, जैसा मैं भी जय पाकर
अपने पिता के साथ उसके सिंहासन पर बैठ गया।" (प्रकाशितवाक्य 3:21)

- ऐतिहासिक-सांस्कृतिक प्रसंग
  - लेखक तथा उसके पाठकों का समय तथा संस्कृति, जिसमें वह सामाजिक, भौगोलिक, स्थलाकृतिक और राजनैतिक कारण सम्मिलित हैं जो लेखक की समायोजना से सम्बन्धित है।
  - <u>लेखक</u> को जानने का यत्न करें

"यह वही चेला है, जो इन बातों की गवाही देता है और जिसने इन बातों को लिखा है और हम जानते हैं कि
उसकी गवाही सच्ची है।" (यूहन्ना 21:24)

  - <u>श्रोतागण</u> को जानने का यत्न करें।

"परन्तु ये इसलिये लिखे गये हैं कि तुम विश्वास करो, कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास द्वारा उसके नाम से जीवन पाओ।" (यूहन्ना 20:31)

- भौगोलिक परिस्थितियों को जानने का यत्न करें...

"तब वह यहूदिया को छोड़कर फिर गलील को चला गया और उसको सामरिया से होकर जाना अवश्य था।" (यूहन्ना 4:3-4)

- सामाजिक परिस्थितियों को जानने का यत्न करें।

"एक सामरी स्त्री जल भरने आई। यीशु ने उससे कहा, "मुझे पानी पिला'।" (यूहन्ना 4:7)

- धार्मिक परिस्थितियों को जानने का यत्न करें...

"उस सामरी स्त्री ने उससे कहा, तू यहूदी होकर मुझ सामरी स्त्री से पानी क्यों मांगता है? (क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रखते)।" (यूहन्ना 4:9)

- आर्थिक परिस्थितियों को जानने का यत्न करें।

"स्त्री ने उससे कहा, हे प्रभु तेरे पास जल भरने को कुछ है भी नहीं, और कुआँ गहरा है, तो फिर वह जीवन का जल तेरे पास कहाँ से आया? क्या तू हमारे पिता याकूब से बड़ा है, जिसने हमें यह कुआँ दिया, और स्वयं भी अपनी सन्तान और अपने पशुओं समेत इसमें से दिया?" (यूहन्ना 4:11-12)

- राजनैतिक परिस्थितियाँ जानने का यत्न करें...

"स्त्री ने उससे कहा, मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रीष्ट कहलाता है, आने वाला है, जब वह आयेगा तो हमें सब बता देगा। यीशु ने उससे कहा, मैं जो बोल रहा हूँ, वही हूँ।" (यूहन्ना 4:25-26)

■ **धर्म-विद्या सम्बन्धी प्रसंग**

- धर्म-शास्त्र में परमेश्वर के प्रकटीकरण करने में यह पद्य कहाँ ठीक बैठता है?
- जे. आई. पॅकर: "बाइबल एक संगीत के वाद्य-यन्त्र की तरह प्रतीत होती, पवित्र-आत्मा इसका परिचालक है। जिस प्रकार से एक महान परिचालक चाहता है, उसी प्रकार से प्रत्येक यंत्र स्वेच्छा से, स्वाभाविकता से, रचनात्मकता से लाया गया है ताकि अपना-अपना संगीत स्वर बजाये, यद्यपि इनमें से कोई भी संगीत को एक सम्पूर्ण रूप में नहीं सुन सकते हैं। हर भाग का सार केवल तब ही पूर्णतया स्पष्ट होता है जब उन्हें बाकी तत्वों से जोड़कर देखा जाता है।"

बाइबल की व्याख्या के लिए बुनियादी सिद्धान्त...

■ याद रखिए कि प्रसंग सर्वोच्च है

- धर्मशास्त्र को कुछ ऐसा कहने के लिए जो विषय-वस्तु के विरोध में हो, कभी भी उसके प्रसंग से अलग मत करिये।

■ हमेशा परमेश्वर के वचन के पूरे परामर्श को ढूँढें।

- धर्मशास्त्र का आप जितना अधिक अध्ययन करेंगे, उतना ही अधिक आप इसके अर्थ को पहचानने के योग्य होंगे।

- याद रखें कि धर्मशास्त्र कभी भी धर्मशास्त्र का विरोधी नहीं होगा
  - धर्मशास्त्र की तुलना धर्मशास्त्र से करें... प्रतिनिर्देश संकेतों का प्रयोग करें।
  - धर्मशास्त्र का सबसे उत्तम व्याख्याकार शास्त्र/ वचन है
- अपने सिद्धान्तों को धर्मशास्त्र के एक अस्पष्ट पद्य पर आधारित न करें।

> *"वैसे ही उसने अपनी सब पत्रियों में भी इन बातों की चर्चा की है जिनमें कुछ बातें ऐसी हैं जिनका समझना कठिन है और अनपढ़ तथा चंचल लोग उनके अर्थों को पवित्र-शास्त्र की अन्य बातों की तरह खींच-तानकर अपने ही नाश का कारण बनते हैं।" (2 पतरस 3:16)*

- धर्मशास्त्र की व्याख्या सरलता से कीजिए
  - शाब्दिक अर्थ का प्रयोग करें जब तक कि प्रयोग न करने का कोई कारण न हो।
  - जब कोई पद्य आपको करने को कहें तो रूपात्मक अर्थ का प्रयोग करें।
  - अगर प्रतीकात्मकता का स्पष्ट रुप से लाक्षणिक प्रयोग हुआ है तो शाब्दिक व्याख्या का उपयोग करें।
  - अगर एक शाब्दिक व्याख्या विपरीत पद्य के प्रसंग, पुस्तक के प्रसंग या लेखक के उद्देश्य की ओर जाती है तो रूपात्मक अर्थ का प्रयोग करें।
  - अगर एक शाब्दिक व्याख्या में दूसरे धर्मशास्त्र की भिन्नता सम्मिलित है तो रूपात्मक अर्थ का प्रयोग करें।
  - अगर एक शाब्दिक व्याख्या असम्भव, निरर्थक या अनैतिक है तो रूपात्मक अर्थ का प्रयोग करें।
- व्याख्या की प्रक्रिया को, पद्य में लेखक के अभीष्ट अर्थ का वर्णन करते हुये पूरा करें।
  - मुख्य प्रश्न: "अर्थ क्या है?"
  - एक या दो वाक्यों में यह लिखने कि लेखक मूल पाठकों से क्या कह रहा है और क्यों कह रहा है
  - उत्तरदायी रहें
    - याद रहे– एक लेख का जो अर्थ कभी नहीं था, उसका वह अर्थ नहीं हो सकता।
  - संक्षिप्त रहें
    - इसको सरल रखें
  - स्पष्ट रहें
    - लेखक ने इस लेख को उस समय उस उद्देश्य के लिये दिया था।
- अपने निष्कर्षों की जाँच, कलीसिया पर आधारित होकर करें।

प्रक्रिया में व्याख्या...

- प्रेरितों के काम 1:8– सार क्या है?

इसको अपने साथ घर लायें

यह किस प्रकार समायोजित होता है?

उद्देश्य...

- शाश्वत/अनंतकालीन सत्यों को पहचानें
- यह आत्म-विद्या सम्बन्धी सिद्धान्त है जो हर समय सब लोगों पर लागू होता है।

निर्देश

- अनन्त सत्य बाइबल संबंधी है
- अनन्त सत्य अनुरुप है (शेष धर्मशास्त्र के साथ)
- अनन्त सत्य अनन्त है
- अनन्त सत्य संसकृतिपार है
- अनन्त सत्य लागू है (यहाँ और वहाँ)

प्रक्रिया में अमल ...

- प्रेरितों के काम 1:8– इसमें कौन से अनन्त सत्य हैं?

अपने घरों में इसका उपयोग करें

मैं क्या करूँ?

व्याख्या तथा उपयोग में अन्तर...

- व्याख्या अर्थ पर केन्द्रित होती है
  - उपयोग क्रिया पर केन्द्रित होता है
- व्याख्या का एक ही अर्थ होता है
  - उपयोग में बहुक्रिया प्रक्रियाएं होती हैं।
- सभी मसीहियों के लिये व्याख्या एक समान होती है
  - उपयोग विशेष परिस्थितियों के लिए भिन्न होता है।
- व्याख्या में हम वचन के भीतर जाते हैं
  - उपयोग में वचन हमारे अंदर जाता है
- व्याख्या पूछती है, "इस लेख का अर्थ क्या है?"
  - उपयोग पूछता है, "यह अर्थ मेरे जीवन में कैसे लागू होता है?"

बाइबल विषयक, उत्तरदायी अनुप्रयोग के लिए तीन चरण...

- अनन्त सत्य (सत्यों) पर मनन करें
- अनन्त सत्य (सत्यों) को आज से लागू करें
  - अनन्त सत्य को इसकी मूल परिस्थिति में देखें
    - मुख्य तत्वों को (लोग, स्थान सम्बन्ध, विचार, वस्तुएं इत्यादि) मूल स्थिति में देखें।
  - एक समकालीन परिस्थिति को पहचानें जो मूल स्थिति के समान्तर है
    - मुख्य तत्वों को (लोग, स्थान, सम्बन्ध, विचार, वस्तुएँ इत्यादि) को देखें जो मूल स्थितियों के समान्तर हैं।
  - अनन्त समय को विशेष रूप से उस समकालीन स्थिति से जोड़ें।
- अनन्त सत्य का अभ्यास करें

"पर तू उन बातों पर जो तूने सीखी हैं और विश्वास किया है, यह जानकर दृढ़ बना रहा कि तूने उन्हें किन लोगों से सीखा है। और बचपन से पवित्र-शास्त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्त करने के लिए बुद्धिमान बना सकता है। सम्पूर्ण पवित्र-शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए। परमेश्वर और मसीह यीशु को गवाह करके जो जीवतों तथा मरे हुओं का न्याय करेगा और उसके प्रगट होने और राज्य की सुधि दिलाकर मैं तुझे आदेश देता हूँ कि तू वचन का प्रचार कर, सत्य तथा असमय तैया रह, सब प्रकार की सहनशीलता और शिक्षा के साथ उलाहना दे, डाँट और समझा।" (2 तीमुथियुस 3:14-4:2)

- पाँच प्रश्न...
  - मैं क्या बनूँ?
    विषय वस्तु का कोई भी अनुप्रयोग आप में यीशु मसीह पर निर्भर है।
  - मैं कैसे सोचूँ?
    हमें वचन से, मसीही रूप में सोचने को सीखना जरूरी है।
  - मैं क्या करुं?
    क्या रोकने के लिए कोई पाप है?
    क्या याद करने के लिए कोई पद है?
    क्या दावा करने के लिए कोई प्रतिज्ञा है?
    क्या दोहराने के लिए कोई प्रार्थना है?
    क्या मानने के लिए कोई आज्ञा है?
    क्या निपटने के लिए कोई दशा है?
    क्या सामना करने के लिए कोई चुनौती है?
  - मैं कहाँ जाऊँ?
    धार्मिक उद्देश्य के संदर्भ में समस्त धर्मशास्त्र को समझना चाहिए
  - मैं किसको सिखाऊं?
    सीखने का सबसे उत्तम तरीका है– इसको छोड़ दें... शिष्य बनाना यही है

प्रक्रिया में अनुप्रयोग...

- प्रेरितों के काम 1:8 में अनन्त सत्य (सत्यों) में शामिल मुख्य तत्वों को देखें:

- कोई भी स्थितियों को पहचानें अर्थात वास्तविक संसारिक दृश्य जिनमें वे मुख्य तत्व हैं

- अब यह लिखिये कि प्रेरितों के काम 1:8 के अनन्त सत्य (सत्यों) किस प्रकार से इस विशेष सांसारिक दृश्यों को प्रभावित करते हैं:

- अनन्त: पांचों प्रश्न पूछिए और किसी भी प्रतिक्रिया को लिखिये, जिसे आपको वचन में ले जाने की आवश्यकता है...
- मुझे क्या होना चाहिए?

- मुझे किस प्रकार सोचना चाहिए?

- मुझे क्या करना चाहिए?

- मुझे कहाँ जाना चाहिए?

- मैं किसको शिक्षित करूँगा

बाइबल अध्ययन किस प्रकार करें: भाग 2

विभिन्न शैलियों की सम्पूर्ण यात्रा
बाइबल के विभिन्न प्रकार के साहित्य की विशिष्ट चुनौतियां

- नियत शैलियाँ पढ़ने में कठिनाईयाँ...
- नियत शैलियों को पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...
- नियत शैलियों को पढ़ने के लिए एक व्यवहारिक प्रक्रिया...
- नियत शैलियों को पढ़ने के उदाहरण...

नये नियम की यात्रा
पत्रियाँ

पत्रियाँ पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- आखिर इसका अर्थ क्या है?

"जो लोग मरे हुओं के लिए बपतिस्मा लेते हैं वे क्या करेंगे? यदि मुर्दे जी ही नहीं उठते तो फिर उनके लिए क्यों बपतिस्मा लेते हैं?" (1 कुरिन्थियों 15:29)

- इस संसार में हमें क्या करना चाहिए?

"भाइचारे के प्रेम से एक-दूसरे से स्नेह रखो, परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो" (रोमियों 12:10)

"हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे, क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं जो परमेश्वर की ओर से न हो, और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराये हुए हैं।" (रोमियों 13:1)

"आपस में पवित्र चुम्बन से नमस्कार करो। तुमको मसीह की सारी कलीसियाओं की ओर से नमस्कार।" (रोमियों 16:16)

पत्रियाँ पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश

- नये नियम की पत्रियाँ सामयिक प्रलेख हैं
  - एक विशिष्ट श्रोतागण को लिखे गये हैं
  - एक विशिष्ट समय में लिखे गये हैं।
  - एक विशिष्ट परिस्थिति को सम्बोधित करने के लिए लिखी गई।
    - व्यवहार जिसे संशोधन की आवश्यकता है।
    - धर्मसिद्धांत जिसे ठीक करने की आवश्यकता है
    - असम्मतियाँ जिन्हें स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।

- हमारे पास उत्तर हैं, परन्तु हमारे पास हमेशा प्रश्न नहीं होता
- हमें केवल एक ही पत्री से सावधान निर्णय नहीं निकालना है
- हमें निश्चय हैं, क्योंकि परमेश्वर ने हमें स्पष्ट रूप से वह बताया है जो सबसे महत्वपूर्ण है

■ नये नियम की पत्रियाँ आत्म-विद्या सम्बन्धी लेख नहीं हैं।

■ सम्पूर्णतया, नये नियम की पत्रियों का एक सामान्य रूप है।

- परिचय
  - लेखक की पहचान
  - श्रोतागण की पहचान
  - अभिनन्दन
  - प्रार्थना या कृतज्ञता
- मुख्य भाग
- निष्कर्ष
  - अन्तिम बधाई
  - विदाई
  - विभिन्न तत्व

    यात्रा की योजनाएं (तीतुस 3:12, फिलेमोन 22)
    कार्यकर्ताओं की प्रशंसा (रोमियों 16:1-2)
    प्रार्थना (2 थिस्स. 3:16; इब्रानियों 13:20-21)
    प्रार्थना निवेदन (1 थिस्स. 5:25; इब्रानियों 13:18-19)
    अभिनन्दन (रोमियों 16:3-16, 21-23; इब्रानियों 13:24; 2 यूहन्ना 13)
    अन्तिम निर्देश तथा प्रबोधन (कुल. 4:16-17; 1 तिमुथियुस 6:20-21a)
    पवित्र चुम्बन (1 थिस्स. 5:26, 1 पतरस 5:14)
    हस्ताक्षर (कुलु. 4:18, 2 थिस्स. 3:17)
    आशीर्वाद (1 कुरि. 16:23-24; इफिसियों 6:23-24)
    अन्तिम स्तुतिगान (2 पतरस 3:18, यहूदा 24-25)
- रूप में अन्तर अक्सर अर्थ के सुराग होते हैं

पत्रियाँ पढ़ने की एक व्यवहारिक प्रक्रिया...

■ उनके निवासों को देखें: मैं क्या देखता हूँ?

- पढ़ें: एक ही बार में पत्रिका को जोर से पढ़ना आरम्भ करें।
- पुन:निर्माण करना: पढ़ते समय, पत्री के पीछे की मूल स्थिति की पुन: रचना करें।

■ उनके निवासों को समझें: इसका क्या अर्थ है?

- सोचें अनुच्छेद!
- प्रत्येक पद्य और पद्यों की श्रृंखला के लिए, के उत्तर एक या दो वाक्यों में लिखें: इसका बिन्दू क्या है?

■ इसे वापिस अपने निवास में लाये: यह कैसे सम्बन्ध रखता है?

- बाइबल विषयक और योग्य को देखें...
  - उन सत्यों पर ध्यान केन्द्रित करें जो विषय-वस्तु और सम्पूर्ण बाइबल के सन्देश के लिए केन्द्रिय हैं।
- शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...

- उन सत्यों पर ध्यान केन्द्रित करें जो धर्म-शास्त्र में सुसंगत रुप से पढ़ाये जाते हैं।

➢ अनुकूल को देखें...

- उन सत्यों पर ध्यान केन्द्रित करें जो स्वाभाविक रूप से हर परिस्थितियों में सच्चे हैं

➢ वर्तमाल काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्य (सत्यों) को लिखें

■ अपने निवासों में इसे लागू करें: मैं क्या करूँ?

➢ अनन्त सत्य पर मनन करें

➢ अनन्त सत्य का आज से सम्बन्ध जोड़ें

- अनन्त सत्य को इसकी मूल स्थिति में देखिए
  मुख्य तत्वों (लोगों, स्थानों, सम्बन्धों, विचारों, वस्तुओं इत्यादि) को विषय-वस्तु में देखिये।
- एक समकालीन स्थिति को पहचाने जो मूल स्थिति के समान हों। मुख्य तत्वों (लोगों, स्थानों, सम्बन्धों, विचारों, वस्तुओं इत्यादि) को देखें जो मूल स्थिति के समान हों।
- अनन्त सत्य का विशेष रूप से उस समकालीन स्थिति से सम्बन्ध जोड़ें

➢ अनन्त सत्य का अभ्यास करें

- मुझे क्या होना चाहिये?
- मुझे कैसे सोचना चाहिए?
- मुझे क्या करना चाहिए?
- मुझे कहाँ जाना चाहिए?
- मैं किसको शिक्षित करूँगा?

पत्रियाँ पढ़ने का एक उदाहरण...

■ इब्रानियों 12:1-3

बाइबल अध्ययन

उनके निवास से हमारे निवास तक

उनके निवास को ध्यान-पूर्वक देखें: मैं क्या देखता हूँ?

कौन, क्या, कहाँ, कब, क्यों और कैसे से सम्बन्धित महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ लिखिये। वचन किस पर जोर देता है, दोहराता है, जोड़ता है, तुलना करता है, विरोध करता है, और वचन किस प्रकार संचार करता है?

- **इब्रानियों की पत्री सताव की धमकियों का सामना करने वाले यहूदी मसीहियों को लिखी गई कि वे यीशु पर भरोसा बनाये रखें।**
- **"इसलिए"– विषय वस्तु को पहले वाले अध्याय से जोड़ता है– क्लेशों में "विश्वास का महल"**
- **निर्देशों के फलस्वरूप अनुशासन में दृढ़ रहने को: स्पष्टतया विश्वास में सहनशीलता के बारे में बात हो रही है।**
- **काल्पनिक चित्र: समापन रेखा की ओर प्रयत्न तथा सहनशीलता एक दौड़ है।**
- **"तो आओ हम"– क्रिया का तीन बार उल्लेख है– फेंक दें, दौड़ें, टकटकी बाँधे रहें।**
- **दो चीजों को फेंक दें: "हर वह वस्तु जो रुकावट है "और" पाप जो उलझाता है।"**
- **सहनशीलता से दौड़ें (इब्रानियों तथा इस विशेष विषय-वस्तु का एक प्रचलित मुख्य विषय)**
- **यीशु मसीह की ओर देखते रहें– वह हमसे पहले दौड़ चुका– उसने सहा और वह मुझे सहने के योग्य बनाता है।**
- **उसने आनन्द के लिए सहा– वह आनन्द द्वारा प्रेरित था।**
- **उसने क्रूस की लज्जा का तिरस्कार किया– यहाँ तक कि सबसे क्रूर लज्जा (अपयश) उसको रोक नहीं सकी।**
- **"परमेश्वर के सिंहासन के दाहिने हाथ"– रोमियों 8:34- वहाँ वह हमारे लिए विनती करता है।**
- **लक्ष्य कथन– हम यीशु मसीह की ओर देखते रहते हैं ताकि हम थक कर निराश न हो जायें।**

उनके निवास को समझें: उसका क्या अर्थ है?

शाब्दिक, ऐतिहासिक-सांस्कृतिक और आत्म-विद्या सम्बन्धी प्रसंगों को ध्यान में रखते हुये, एक या दो वाक्यों में, मूल पाठकों के लिये, विषय-वस्तु के अर्थ को पहचानें।

इब्रानियों के लेखक ने इन यहूदी इसाईयों को, विरोध होने पर भी, अपने विश्वास में दृढ़ रहने को प्रोत्साहित किया।

वह उनको याद दिलाता है कि यीशु मसीह को ताकते रहना ही उनके दृढ़ रहने का एक मात्र मार्ग है।

इसे अपने निवास में लायें: यह किस प्रकार जुड़ता है?

इस पद्य में अनन्त सत्य (सत्यों) को पहचाने, जो मूल पाठकों तथा हमारे साथ जुड़ते हैं (अगर पुराने नियम के पद्य का पढ़ रहे हैं तो, आत्म-वैधान्तिक सिद्धान्तों को नये नियम के द्वारा निकालें)

मसीही जीवन एक दौड़ की तरह है जिसे प्रयत्न तथा धैर्य की आवश्यकता होती है

हमसे पहले गये हुये सन्तों ने धैर्य के मूल्यवान उदाहरण दिए हैं जो हमें प्रोत्साहित और प्रेरित करते हैं।

दौड़ को सफलता-पूर्वक दौड़ने के लिए, मसीहियों को उन चीजों का तिरस्कार करना होगा जो उन्नति में बाधा हैं और यीशु मसीह के साथ अपने सम्बन्धों पर पूर्णतया केन्द्रित होना होगा।

इसे अपने निवास में लागू करें: मैं क्या करूँ?

बाइबल विषयक और हमारे प्रसंग के बीच समान्तर परिस्थितियों को पहचानें। पाँच प्रश्नों द्वारा, अनन्त सत्य का अपने जीवन में विशेष अनुप्रयोग करें:

मुझे क्या होना चाहिये?

अपने जीवन के हर पहलू में, मैं पूर्णतया यीशु मसीह पर ही केन्द्रित रहना चाहता हूँ, विशेषकर इस समय मैं जिस परीक्षा से गुजर रहा हूँ उसमें भी

मुझे कैसे सोचना चाहिए?

इस समय मैं जिन क्लेशों में पड़ा हूँ, उनके बारे में मुझे यीशु मसीह की सहनशीलता के प्रकाश में ही सोचने की आवश्यकता है। अपनी कठिनाई में मुझे उसके दृष्टिकोण की आवश्यकता है।

मुझे क्या करना चाहिए?

मैं वापिस जाकर उन दूसरे व्यक्तियों के बारे में पढ़ूंगा जिन्होंने कठिन चुनौतियों का सामना किया और किस प्रकार से परमेश्वर ने उनके जीवन में सब कुछ प्रदान किया। मैं अपने स्वार्थ के लिये भी पश्चाताप करूंगा जो मुझे उलझाता है और यीशु मसीह से दूर रखता है।

मुझे कहाँ जाना चाहिये?

यद्यपि मैं नहीं समझता हूँ कि मैं इस क्लेश को क्यों भोग रहा हूँ, और अपने विश्वास में संघर्ष कर रहा हूँ, मैं अपनी कलीसिया के साथ आराधना के लिए मिलता-जुलता रहूँगा (इब्रानियों 10:24-25)

मैं किसको शिक्षित करूँ?

मैं कष्टों में भी यीशु मसीह की प्रधानता को अपने सह-कार्यकर्ताओं को जो यीशु मसीह को नहीं जानते स्वेच्छा से दर्शाने के लिए अवसरों को ढूँढता रहूँगा। अपने वर्तमान क्लेश के बारे में मैं अपने छोटे समूह के साथ निष्ठावान रहूँगा ताकि वह शक्ति जो परमेश्वर मुझे देता है, उनको सहनशील होने के लिए प्रोत्साहित कर सकें।

पूर्ववर्ती पृष्ठ, बाइबल अध्ययन की अभ्यास-पुस्तिका का एक उदाहरण हैं। इस अध्ययन के सत्र 2 में यह अभ्यास करने के लिए प्रयोग में ला सकते हैं। प्रत्येक खण्ड के निष्कर्ष में हर बार जब आप "का एक उदाहरण..." को पाते हैं, तो यह आपके अध्ययन के मार्ग-दर्शन के लिए इस आकृति को प्रयोग कने का एक अवसर होगा।

इन अभ्यास पुस्तिका के पृष्ठों की रिक्त प्रतियाँ, आज रात्रि को यहाँ पर गलियारे में उपलब्ध हैं, या फिर आप इन्हें सीक्रेट चर्च की वैबसाइट– डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.सीक्रेटचर्च.ओआरजी से छपने योग्य रिक्त प्रपत्रों के रूप में भी प्राप्त कर सकते हैं। यह आपको व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन के लिए प्रयोग किये जा सकते हैं।

नये नियम की यात्रा

सुसमाचार

सुसमाचारों को पढ़ने में कठिनाइयाँ...

- अस्पष्ट अन्तर:

"परन्तु यीशु चुप रहा। तब महायाजक ने उससे कहा मैं तुझे जीवते परमेश्वर की शपथ देता हूँ कि यदि तू परमेश्वर का पुत्र मसीह है, तो हमसे कह दे। यीशु ने उत्तर दिया, तूने आप ही कह दिया वरन मैं तुमसे यह भी कहता हूँ कि अब से तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने ओर बैठे और आकाश के बादलों पर आते देखोगे।" (मत्ती 26:63-64)

"परन्तु वह मौन साधे रहा और कुछ उत्तर न दिया। महायाजक ने उससे फिर पूछा, क्या तू उस परम धन्य का पुत्र मसीह है? यीशु ने कहा, मैं हूँ और तुम मनुष्य के पुत्र को सर्वशक्तिमान के दाहिने ओर बैठे और आकाश के बादलों के साथ आते देखोगे।" (मरकुस 14:61-62)

"यदि तू मसीह है, तो हमसे कह दे! उसने उनसे कहा, यदि मैं तुमसे कहूँ, तो तुम प्रतीति न करोगे और यदि पूछूँ तो उत्तर न दोगे। परन्तु अब से मनुष्य का पुत्र सर्वशक्तिमान परमेश्वर की दाहिने ओर बैठा रहेगा। इस पर सबने कहा, तो क्या तू परमेश्वर का पुत्र है? उसने उनसे कहा, तुम आप ही कहते हो, क्योंकि मैं हूँ।" (लूका 22:67-70)

- स्पष्ट अन्तर:

"दूसरे दिन जब वे बैतनिय्याह से निकले तो उसको भूख लगी। वह दूर से अंजीर का एक हरा पेड़ देखकर निकट गया कि क्या जाने उसमें कुछ पायें, पर पत्तों को छोड़कर कुछ न पाया, क्योंकि फल का समय न था। इस पर उसने कहा, अब से कोई तेरा फल कभी न खाये, और उसके चेले सुन रहे थे। फिर भोर को जब वे उधर से जाते थे तो उन्होंने उस अंजीर के पेड़ को जड़ से सूखा हुआ देखा। पतरस को वह बात स्मरण आई और उसने कहा, हे रब्बी! देख, यह अंजीर का पेड़ जिसे तूने स्राप दिया था, सूख गया है। यीशु ने उसको उत्तर दिया, परमेश्वर पर विश्वास रखो, मैं तुमसे सच कहता हूँ कि जो कोई इस पहाड़ से कहे तू उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ और अपने मन में सन्दे न करे, तो उसके लिए वही होगा। इसलिये मैं तुमसे कहता हूँ कि जो कुछ तुम प्रार्थना करके माँगो तो प्रतीति कर लो कि तुम्हें मिल गया। और जब कभी तुम खड़े हुये प्रार्थना करते हो तो यदि तुम्हारे मन में किसी के प्रति कुछ विरोध हो, तो क्षमा करो, इसलिए कि तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे।" (मरकुस 11:12-14, 20-25)

"भोर को जब वह नगर को लौट रहा था तो उसे भूख लगी। सड़क के किनारे अंजीर का एक पेड़ देखकर वह उसके पास गया, और पत्तों को छोड़ उसमें कुछ न पाकर उससे कहा, अब से तुझमें फिर कभी फल न लगें। और वह पेड़ तुरन्त सूख गया। यह देख कर चेलों को अचम्भा हुआ और उन्होंने कहा यह अन्जीर का पेड़ तुरन्त कैसे सूख गया? यीशु ने उनको उत्तर दिया, मैं तुमसे सच कहता हूँ, यदि तुम विश्वास रखो और सन्देह न करो, तो न केवल यह करोगे जो इस अंजीर के पेड़ से किया गया है, परन्तु यदि इस पहाड़ से भी कहोगे, उखड़ जा और समुद्र में जा पड़ तो वह हो जायेगा। और तुम, कुछ भी प्रार्थना में विश्वास से मांगोगे, वह सब तुम को मिलेगा।" (मत्ती 21:18-22)

सुसमाचारों को पढ़ने के लिए सामान्य निर्देशक सिद्धान्त...

- सुसमाचारों को एक ही व्यक्ति के बारे में लिखा गया
  - सुसमाचारों में दो अंश (भाग) जो कार्य में संलग्न हैं:
    - यीशु मसीह की शिक्षाएं
    - यीशु मसीह के बारे में कथाएं
- भिन्न लेखकों द्वारा सुसमाचार लिखे गये
  - सुसमाचार में दो स्थापनाएं हैं
    - यीशु मसीह का ऐतिहासिक विषय
    - लेखकों का ऐतिहासिक विषय
- विभिन्न श्रोताओं के लिये सुसमाचार लिखे गये हैं:
  - सुसमाचारों में तीन सिद्धान्त कार्य संलग्न हैं:
    - चयनता
    - व्यवस्थापन
    - अनुकूलता

सुसमाचारों को पढ़ने के लिए एक व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
  - कथाओं तथा उपदेशों के सम्बन्ध में सोचें
    - व्यक्तिगत कथाओं का उपदेश: सामान्य प्रश्नों के उत्तरों को ढूँढें...
    - सामूहिक कथाओं तथा उपदेश: संबंध को ढूँढे
  - सुसमाचारों में विशेष शाब्दिक आकृतियों को ढूँढे
    - अत्युक्ति

"यदि तेरी दाहिनी आँख तुझे ठोकर खिलाये तो उसे निकाल कर फेंक दे, क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाये और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाये। यदि तेरा दाहिना हाथ तुझे ठोकर खिलाये तो उसको काट कर फेंक दे क्योंकि तेरे लिये यही भला है कि तेरे अंगों में से एक नष्ट हो जाये और तेरा सारा शरीर नरक में न डाला जाये।" (मत्ती 5:29-30)

"यदि कोई मेरे पास आए और अपने माता-पिता तथा बच्चों और भाइयों और बहनों वरन् अपने प्राण को भी अप्रिय न जाने, तो वह मेरा चेला नहीं हो सकता।"
(लूका 14:26)

"चेले उसकी बातों से अचम्भित हुये। इस पर यीशु ने उनसे कहा, हे बालकों जो धन पर भरोसा रखते हैं, उनके लिये परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना कैसा कठिन है। परमेश्वर के राज्य में धनवान के प्रवेश करने से ऊँट का सुई के नाके में से निकल जाना सहज है।"
(मरकुस 10:24-25)

- व्यंग्य

"उसने उनसे एक दृष्टांत कहा: किसी धनवान की भूमि में बड़ी उपज हुई। तब वह अपने मन में विचार करने लगा, मैं क्या करूँ? क्योंकि मेरे यहाँ जगह नहीं जहाँ अपनी उपज

इत्यादि रखूँ। और उसने कहा मैं यह करूँगा: मैं अपनी बटवारियाँ तोड़ कर उनसे बड़ी बनाऊँगा और वहाँ अपना सब अन्न व सम्पत्ति रखूँगा और अपने प्राण से कहूँगा कि प्राण तेरे पास बहुत वर्षों के लिए बहुत सम्पत्ति रखी है, चैन कर, खा, पी, सुख से रह, परन्तु परमेश्वर ने उससे कहा, हे मूर्ख! इसी रात तेरा प्राण तुझसे ले लिया जायेगा, तब जो कुछ तूने इकट्ठा किया है वह किसका होगा? ऐसा ही वह मनुष्य भी है जो अपने लिये धन बटोरता है, परन्तु परमेश्वर की दृष्टि में धनी नहीं।"
(लूका 12:16-21)

- <u>आलंकारिक</u> प्रश्न
  एक उत्तर प्राप्त करने के बदले, एक बात बताने के लिए बनाये गये प्रश्न

"यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों से ही प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिये क्या फल होगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा नहीं करते?" (मत्ती 5:46)

"तुम में कौन है, जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक घड़ी भी बढ़ा सकता है?" (मत्ती 6:27)

"उसने अपने चेलों से कहा, तुम क्यों डरते हो? क्या तुम्हें अब तक विश्वास नहीं?" (मरकुस 4:40)

"क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूँ? नहीं, अलग कराने आया हूँ।" (लूका 12:51)

- समानताएँ
  जब नियत पंक्तियाँ एक साथ पढ़े जाने के लिए संरचनात्मक हों
  समान अर्थ
  पंक्तियाँ मूलत: समान चीज को एक समान तरीके से ही कहती हैं

"माँगों तो तुम्हें दिया जायेगा, ढूँढो तो पाओगे, खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायेगा।" (मत्ती 7:7)

"कोई वस्तु छिपी नहीं, परन्तु इसलिये है कि प्रगट हो जाये, और न गुप्त है, पर इसलिये कि प्रगट हो जाये।" (मरकुस 4:22)

- तुलना
  दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति की तुलनात्मक है।

"क्योंकि जिसके पास है, उसको दिया जायेगा और जिसके पास नहीं है उससे वह भी जो उसके पास है, ले लिया जायेगा।" (मरकुस 4:25)

"भला मनुष्य मन के भले भण्डार से भली बातें निकालता है और बुरा मनुष्य बुरे भण्डार से बुरी बातें निकालता है।" (मत्ती 12:35)

- विकासात्मक

  दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति को आंशिक रूप से दोहराती है और फिर पहली पंक्ति के विचार को एक चरमावस्था को बढ़ा देती है।

"वह जो तुम्हें ग्रहण करता है, मुझे ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है, वह मेरे भेजने वाले को ग्रहण करता है।" (मत्ती 10:40)

"जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आयेगा और जो कोई मेरे पास आयेगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।" (यूहन्ना 6:37)

- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - व्याख्या के लिए दो चुनौतियाँ:
    - सीधा सोचें

      सुसमाचार किस प्रकार से यीशु मसीह का प्रतिनिधत्व करता है
    - समस्तरी रुप से सोचें

      सुसमाचार एक दूसरे से कैसे सम्बन्ध जोड़ते हैं:
  - प्रत्येक कथा / उपदेश और कथाओं / उपदेशों की श्रृंखला के लिए, एक या दो वाक्यों में पूर्ण रूप से प्रश्न का उत्तर लिखें: सार क्या है?
- इसे वापिस अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक तथा अनुकूल को ढूँढे...
    - देखिए, कि यीशु मसीह किस प्रकार से पुराने नियम को परिपूर्ण करता है नियम (मत्ती 5-7; 22:37-40; लूका 24:13-35)
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...
    - देखिये कि यीशु मसीह किस प्रकार से शिक्षा देते हैं और परमेश्वर के राज्य को दर्शाते हैं (राज्य पर पुराने तथा नये नियम के सीक्रेट चर्च की टिप्पणियों को देखें)
  - प्रयोग किये जाने योग्य चीजों को देखें...
    - अनन्त सत्यों की पहचान के लिये व्यक्तिगत कथाओं का सबसे बड़ा संदर्भ देखें।
  - वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्य (सत्यों) को लिखें।
- इसे अपने निवास में लागू करें: मैं क्या करूँ?
  - अनन्त सत्य पर मनन करें
  - अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें

    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिए?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
    - मुझे किसे शिक्षित करना चाहिये?

सुसमाचारों को पढ़ने का एक उदाहरण...

- मरकुस 4:35-41

नये नियम की यात्रा

दृष्टान्त

दृष्टान्तों को पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- हमारे तथा मूल श्रोताओं के बीच दूरी।
- दृष्टान्त में यीशु द्वारा नियत अर्थ की गहराई।

दृष्टान्तों को पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- दृष्टान्त का मुख्य सार निर्णायक है।
- दृष्टान्त का मुख्य उद्देश्य श्रोताओं को एक निश्चित रूप से प्रतिक्रिया की ओर ले जाना है।

दृष्टान्तों को पढ़ने के लिए एक व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ
  - श्रोता के दृष्टिकोण से दृष्टान्त को बार-बार पढ़िये
  - हवालों के मुख्य तत्वों को जो यीशु मसीह और उसके सुनने वालों के लिए परिचित हैं, पहचानिए।
  - यह निश्चित करें कि मूल श्रोताओं ने इस दृष्टान्त पर कैसे प्रतिक्रिया करी होती है।
- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - ज्यादा से ज्यादा कक्षा में प्रत्येक मुख्य व्यक्ति या पात्रों के समूहों के लिये एक मुख्य तथ्य को देखें।
  - एक या दो वाक्य में, यीशु मसीह द्वारा नियत मुख्य तथ्य को लिखें जब उसने अपने दृष्टान्त को अपने मूल श्रोताओं के साथ बाँटा था।
- इसे अपने निवास में लाइये: यह किस प्रकार जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक तथा अनुकूल को ढूँढें...
    - दृष्टान्त को, धर्मशास्त्र में सम्पूर्ण सत्यों में बाँधने के यत्नों में, दृष्टान्त में गहराई के साथ को देखने से बचिये।
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...
  - प्रयोग करने योग्य के बारे में देखें...
  - वर्तमान काल की क्रियाओं को प्रयोग करते हुये अनन्त सत्य (सत्यों) को लिखिये।
- अपने निवास में इसे लागू करें: मैं क्या करुँ?
  - अनन्त सत्य पर मनन करें।
  - वर्तमान के साथ अनन्त सत्य को जोड़ें।
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें।
    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिए?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
    - मैं किसको शिक्षित करूँगा?

दृष्टान्तों को पढ़ने का एक उदाहरण...

- लूका 10:25-37

नये नियम की यात्रा
प्रेरितों के काम

प्रेरितों के काम पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- क्या यह पूर्ववर्ती या सिद्धांत है?

"वे सब पवित्र-आत्मा से भर गये और आत्मा ने उन्हें बोलने की सामर्थ्य दी, वे अन्य भाषा बोलने लगे।"
(प्रेरितों के काम 2:4)

"उन्होंने जाकर उनके लिए प्रार्थना की कि वह पवित्र-आत्मा पाएँ। क्योंकि वह अब तक उनमें से किसी पर न उतरा था, उन्होंने तो केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। तब उन्होंने उन पर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र-आत्मा पाया।"
(प्रेरितों के काम 8:15-17)

"यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था। जब पौलुस देर तक बातें करता रहा तो वह नींद के झौंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा और मरा हुआ उठाया गया। परन्तु पौलुस उतरकर उससे लिपट गया और गले लगाकर कहा, घबराओ मत क्योंकि उसका प्राण उसी में है। और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उनसे बातें करता रहा कि सुबह हो गई। और वे उस जवान को जीवित ले आए और बहुत शान्ति पाई।"
(प्रेरितों के काम 20:9-12)

- दोनों - और पद्धति का विचार करें...

प्रेरितों के काम को पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- प्रेरितों के काम की पुस्तक एक उत्तर कथा है।
- यह पुस्तक एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ एक कथा है।
- यह पुस्तक विषय-वस्तु की दृष्टि से और भौगोलिक दोनों ही रूप से सुनियोजित है।
  - विशेष (केन्द्रिय) विषय-वस्तु:
    - सुसमाचार
    - पवित्र-आत्मा
    - कलीसिया
    - संसार
  - केन्द्रीय भौगोलिक संरचना:
    - यरूशलेम में कलीसिया की साक्षी (1-7)
    - यहूदिया तथा सामरिया में कलीसिया की साक्षी (8-9)
    - पृथ्वी के छोर तक कलीसिया की साक्षी (10-28)
- प्रेरितों की पुस्तक एक नमूना/ आर्दश है कि किस प्रकार से परमेश्वर चाहता है कि कलीसिया पवित्र-आत्मा की सामर्थ्य से सुसमाचार को पूरे संसार में ले जाये।

प्रेरितों के काम को पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ
  - पात्रों के बारे में प्रश्न पूछें (सकारात्मक तथा नकारात्मक)।
  - भाषण के बारे में प्रश्न पूछें।
  - लूका से टीका-टिप्पणी के बारे में प्रश्न पूछें
- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - देखिये कि लूका प्रेरितों की पुस्तक के हर वृत्तान्त में क्या उद्देश्य है।
  - दोहराए गए नमूनों और विषय-वस्तुओं को पूरे प्रेरितों की पुस्तक में देखें।
    - आत्मा की परिपूर्णता तथा वचन की उद्घोषणा (1:8; 2:4; 2:17-18; 4:31; 8:15-17; 9:17-20; 10:44-46; 19:6)
  - पूरे संसार में सुसमाचार का विस्तार (6:7; 9:31; 12:24; 16:5; 19:20)।
  - फिर प्रत्येक वृत्तान्त को देखें और फिर, "मुख्य तथ्य क्या है?" इस प्रश्न के द्वारा सार निकालें।
  - एक या दो वाक्यों में वृत्तान्त के तथ्य को इस बात को निश्चित करते हुये लिखें कि आपकी व्याख्या प्रेरितों की पुस्तक के बड़े विवरणों से मेल खाती है।
- इसको वापिस अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक तथा अनुकूल को देखें...
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...
    - लूका की दृष्टि के उद्देश्य से प्रेरितों के काम की पुस्तक से सभी अन्तर्निहित सम्बन्धों को निकालें।
  - प्रयोग होने योग्य.... को देखें
  - वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्यों को लिखें।
- इसे अपने निवास में लागू करें: मैं क्या करूँ?
  - अनन्त सत्य पर मनन करें
  - अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें।
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें
    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिये?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
    - मैं किसको शिक्षित करूँगा?

प्रेरितों को पढ़ने का एक उदाहरण...

- प्रेरितों 6-7

पुराने नियम की यात्रा

विवरण

पुराने नियम की विवरणों को पढ़ने में कठिनाइयाँ...

- विविध प्रकार की कथाएँ
  - पुराने नियम का लगभग 40% भाग विवरणात्मक है।
  - उत्पत्ति, यहोशू, न्यायियों, रूत, पहला तथा दूसरा शमूएल, पहला तथा दूसरा राजा, पहला तथा दूसरा इतिहास, एज्रा, नहेम्याह, दानिय्येल, योना, हाग्गै।
- पात्रों की विविधता।
- चुनौतियों की विविधता

पुराने नियम के विवरणों को पढ़ाने के लिए सामान्य निर्देश...

- कुल मिलाकर, पुराने नियम के विवरण नहीं हैं...
  - दृष्टान्त गुप्त अर्थों से भरा है।
  - नैतिक पाठ पढ़ाने का इरादा।
  - उपदेश पढ़ाने का इरादा।
  - मनुष्य केन्द्रित।
- कुल मिलाकर, पुराने नियम के विवरण हैं...
  - एक विशिष्ट उद्देश्य की कथाएँ
  - जो हो चुका उनका लेखा, हर समय जो होना चाहिये या जो नहीं होना चाहिए।
  - विशिष्ट और अपूर्ण

पुराने नियम के विवरणों को पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ
  - पद्य को ध्यान-पूर्वक पढ़ें
  - पाँच आधारिक भागों को देखें:
    - योजना
    - विकास, संघर्ष और संकल्प
    - दृश्य
      समय तथा स्थान पर ध्यान केन्द्रित करें
    - पात्र
      पुराने नियम के विवरण में पात्र केन्द्रित हैं।
      तुलना और भिन्नता को ढूंढे
    - वार्तालाप
      पात्रों के विकास में वार्तालाप का बड़ा योगदान है
    - कथावाचक
      उसके द्वारा संचारित किये हुए निहित अर्थ को ढूँढे
      व्यंग्य को ढूँढे
- उनके निवास को समझें: इसका अर्थ क्या है?
  - पुराने नियम के प्रत्येक विवरण को तीन स्तरों पर व्याख्या करें:

- पहला स्तर– व्यक्तिगत इतिहास
- दूसरा स्तर– राष्ट्रीय इतिहास
- तीसरा स्तर– छुटकारे का इतिहास

➢ साहित्यिक प्रसंग पर अधिक ध्यान दें
- कम से कम, तीन अध्याय पढ़ें
  पूरा अध्याय
  पूर्व अध्याय
  अनुवर्ती (बाद का) अध्याय

➢ व्याख्या में इन सामान्य त्रुटियों से बचें:
- प्रतीकात्मकता
  विषय-वस्तु से बाहर, निहित अर्थ को ढूँढना
- अप्रसंगिकता
  पूर्ण ऐतिहासिक तथा शाब्दिक प्रसंगों की अपेक्षा
- चयनता
  जो कथाएँ आपको पसन्द हैं उनके अंशों को उठाना और चुनना।
- नैतिकता
  प्रत्येक व्यक्तिगत विवरण के अन्त में पूछना, "इस कथन की शिक्षा क्या है?"
- निजीकरण
  यह सोचना कि यह सारे विवरण आपके बारे में है।
- मिथ्या विनियोग
  समकालीन संस्कृति में विवरण का दुरुपयोग
- मिथ्या संयोजन
  विवरण में उन तत्वों को संयोजित करना जो कथावाचक द्वारा सीधे जुड़े नहीं है।
- पुन: विवरण करना
- किसी विवरण या कहानी की पुन: व्याख्या करते हुए उसमें अपनी इच्छा को समाविष्ठ करना।
- प्रतिरूप
  एक निश्चित प्रकार से व्यवहार करने के लिए विवरणों से अनुमति या बाध्यता को माँगना

➢ प्रत्येक कथा और कथाओं की श्रृंखलाओं के लिए, एक या दो वाक्यों में सकल प्रश्न का उत्तर लिखें: इस कथा का अर्थ क्या है?

■ इसे अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?

➢ बाइबल विषयक तथा अनुकूल को ढूँढे...
- एक आध्यात्मिक सिद्धान्त को इसके पुराने नियम के प्रसंग में पहचानें
- उस आध्यात्मिक सिद्धान्त को नये नियम के द्वारा छानकर देखें।
- दो प्रमुख प्रश्न पूछें
  क्या नया नियम उस सिद्धान्त को जोड़ता है?
  क्या नया नियम उस सिद्धान्त को बदलता है?

➢ शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...

- प्रयोग होने योग्य को देखें...
- वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्यों को लिखें

■ इसे अपने निवास में लागू करें: मैं क्या करूँ?
- अनन्त सत्य पर मनन करें
- अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें
- अनन्त सत्य का अभ्यास करें
  - मुझे क्या होना चाहिए?
  - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
  - मुझे क्या करना चाहिये?
  - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
  - मैं किसको शिक्षित करूँगा?

पुराने नियम के विवरण को पढ़ने का एक उदाहरण...

■ यहोशू 2

पुराने नियम की यात्रा

व्यवस्था (नियम)

पुराने नियम की व्यवस्था को पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- हम कई नियमों के बारे में आश्चर्य-चकित होते हैं:

"अपनी भूमि की पहली उपज का पहला भाग अपने परमेश्वर यहोवा के भवन में ले आना।
बकरी के बच्चे को उसकी माँ के दूध में न सिझाना।"
(निर्गमन 34:26)

"तुम मेरी विधियों को निरन्तर मानना। अपने पशुओं को भिन्न जाति के पशुओं से मेल न खाने देना। अपने खेत में दो प्रकार के बीज इकट्ठे न बोना और सनी और ऊन की मिलावट से बना हुआ वस्त्र न पहनना।"
(लैव्यव्यवस्था 19:19)

"जिसके सिर के बाल झड़ गये हों और वह चन्दुला तो है
पर शुद्ध है।" (लैव्यव्यवस्था 13:40)

"कोई स्त्री पुरुष का पहिरावा न पहने और न कोई पुरुष स्त्री का पहिरावा पहनें, क्योंकि ऐसे कामों के सब करने वाले तेरे परमेश्वर यहोवा की दृष्टि में घृणित हैं।"
(व्यवस्थाविवरण 22:5)

- हम कई नियमों का उल्लंघन करते हैं...

"पक्के बाल वाले के सामने उठ खड़े होना है और बूढ़े का आदर मान करना और अपने परमेश्वर का भय निरन्तर मानना।" (लैव्यव्यवस्था 19:32)

"मुर्दों के कारण अपने शरीर को न चीरना और न उसमें छाप लगाना,
मैं यहोवा हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 19:28)

"सुअर तो चिरे खुर का होता है परन्तु पागुर नहीं करता, इस कारण तुम्हारे लिये वह अशुद्ध है। तुम न तो इसका माँस खाना और न इसकी लोथ छूना।"
(व्यवस्थाविवरण 14:8)

- हम कई नियमों का पालन करते हैं:

"पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना, मैं यहोवा हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 19:18)

"तू खून न करना।"
(निर्गमन 20:13)

"तू व्यभिचार न करना"
(व्यवस्थाविवरण 5:18)

- हम कैसे समझते हैं कि हमें कब आश्चर्यचकित होना है, कब उल्लंघन करना है, और कब पालन करना है

पुराने नियमों की व्यवस्था को पढ़ने के लिये सामान्य निर्देश...

- बाइबल में पुराने नियम के "नियम"....
  - 600 से अधिक आज्ञाएं हैं (निर्गमन 18:20)
  - यह समस्त आज्ञाएं एक साथ हैं (मत्ती 5:18)
  - पुराने नियम की पहली पांच पुस्तकें- पैन्टाट्यूक (यहोशू 1:8)
  - पुराने नियम की सम्पूर्ण धार्मिक प्रणाली
  - पुराने नियम की व्यवस्था की धार्मिक गुरु की व्याख्या (प्रेरितों के काम 10:28)
- पुराने नियम की व्याख्या परमेश्वर की ओर से उसके लोगों को एक वरदान है।
- पुराने नियम की व्याख्या एक वाचा है
- पुराने नियम की व्याख्या हमारा नियम नहीं है
  - सामान्य नियम:
    - जब तक पुराने नियम का एक भी नियम, नये नियम में दोहराया या माना नहीं जाता है, तब तक यह परमेश्वर के लोगों पर सीधी तरह से लागू नहीं है
  - वह नियम जिनको समर्थन नहीं है:
    - इस्राएल के नागरिक कानून
    - इस्राएल के पारम्पारिक नियम
  - वह नियम जिनको समर्थन है:
    - नई वाचा के प्रसंग में दोहराये या समर्थन प्राप्त किये हुए नियम

"ये ही दो आज्ञाएं सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार है।" (मत्ती 22:40)

"तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, अपने सारे जीव, अपनी सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना।" (व्यवस्थाविरण 6:5)

"पलटा न लेना, और न अपने जाति भाइयों से बैर रखना, परन्तु एक दूसरे से अपने ही समान प्रेम रखना, मैं यहोवा हूँ।" (लैव्यव्यवस्था 19:18)

- पुराने नियम की व्यवस्था अभी भी हमारे लिए परमेश्वर का वचन है, यद्यपि यह हमारे लिए परमेश्वर की आज्ञा नहीं है।

"जब तू नया घर बनाए तब उसकी छत पर आड़ के लिये मुण्डेर बनाना, ऐसा न हो कि कोई छत पर से गिरे और तू अपने घराने पर खून का दोष लगाये।" (व्यवस्थाविवरण 22:8)

"यदि तेरा कोई भाईबन्धु, अर्थात कोई इब्री या इब्रिन तेरे हाथ बिके और वह छः वर्षों तक तेरी सेवा कर चुके, तो सातवें वर्ष उसको अपने पास से स्वतन्त्र करके जाने देना और जब तू उसको स्वतन्त्र करके अपने पास से जाने दे तब उसे छूछे हाथ न जाने देना, वरन अपनी भेड़ बकरियों, खलिहानों और दाखमधु के कुण्ड में से उसको बहुतायत से देना, तेरे परमेश्वर यहोवा ने जैसी तुझे आशीष दी हो उसी के अनुसार उसे देना। इस बात को स्मरण रखना कि तू भी मिस्र देश में दास था, और तेरे परमेश्वर यहोवा ने तुझे छुड़ा लिया, इस कारण मैं आज तुझे यह आज्ञा सुनाता हूँ। यदि वह तुझसे या तेरे घराने से प्रेम रखता है और तेरे संग आनन्द से रहता हो,

और इस कारण तुझसे कहने लगे कि मैं तेरे पास से न जाऊँगा, तो सुतारी लेकर उसका कन किवाड़ पर लगाकर छेदना, तब वह हमेशा तेरा दास बना रहेगा। और अपनी दासी से भी ऐसा ही करना।"

(व्यवस्थाविवरण 15:12-17)

पुराने नियम की व्यवस्था को पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ
  - एक साथ नियमों को देखें
  - दो मूल बातों को ध्यान में रखते हुए नियमों का सावधानी पूर्वक अवलोकन करें:
    - सर्वसाधारण रुपरेखा- सुनिश्चित नियम
    - विशिष्ट परिस्थिति- धर्म संबंधी नियम
      - भोजन नियम

भोजन नियम

"सुअर जो चिरे खुर का होता है, परन्तु पागुर नहीं करता, इसलिये तुम्हारे लिए अशुद्ध है।" (लैव्यव्यवस्था 11:7)

- लहू की बलि के लिये नियम

"और बछड़े को मिलाप वाले तम्बू के सामने ले आना। और हारून तथा उसके पुत्र बछड़े के सिर पर अपने हाथ रखें, तब उस बछड़े को यहोवा के सम्मुख मिलापवाले तम्बू के द्वार पर बलिदान करना। और उसे लहू में से कुछ लेकर अपनी ऊंगली से वेदी के सींगों पर लगाना और शेष सब लहू को वेदी के पाए पर उंडेल देना।"

(निर्गमन 29:10-12)

- असामान्य रोक

"जो अपनी मृत्यु से मर जाये, उसे तुम न खाना, उसे अपने फाटकों के भीतर किसी परदेशी को खाने के लिए दे सकते हो, व किसी पराए के हाथ बेच सकते हो। परन्तु तू तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पवित्र समाज है। बकरी का बच्चा उसकी माँ के दूध में न पकाना।"

(व्यवस्थाविवरण 14:21)

- नियम जिनको पालन करने वालों को आशीष दी जाती है

"तीन वर्ष के बीतने पर तीसरे वर्ष की उपज का सारा दशमांश निकालकर अपने फाटकों के भीतर इकट्ठा कर रखना, तब लेवीय जिसका तेरे संग कोई निज भाग व अंश न होगा वह, और वो परदेशी, और अनाथ और विधवाएं तेरे फाटकों के भीतर हों वे भी आकर पेट भर खाएं, जिससे तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे सब कामों में तुझे आशीष दे।"

(व्यवस्थाविवरण 14:28-29)

  - नियमों को उनके संदर्भ में समझें।
- उनके घर को समझें: उसका क्या अर्थ है?

  - नियम को परमेश्वर के प्रेरित वचन की तरह समझें, आपके लिये परमेश्वर की प्रत्यक्ष आज्ञा की तरह नहीं
  - नियम में परमेश्वर के व्यक्तिगत को समझें, उसकी पवित्रता, दया तथा प्रेम के साथ

- नियम को एक भेंट के रूप में समझें, एक प्रतिबन्ध की तरह नहीं
- नियम को पुरानी वाचा के लिए आधार के रूप में समझें और नई वाचा में बाध्यकारक की तरह नहीं
- नियम के सार को समझें, जो नये नियम में दोहराया गया है।
- प्रत्येक नियम तथा नियमों की श्रृंखला के लिए, एक या दो वाक्यों में सकल प्रश्न का उत्तर लिखें: "इन नियमों का अर्थ क्या है?

■ इसे अपने निवास में लेकर आयें: यह कैसे जुड़ता है?
- बाइबल विषयक तथा अनुकूल को ढूंढे...
  - अपने पुराने नियम के प्रसंग में एक आध्यात्मिक सिद्धान्त पहचानें
  - उस सिद्धान्त को नये नियम द्वारा निकाल कर लायें
  - दो मुख्य प्रश्न पूछें:
    क्या नया नियम उस सिद्धान्त में कुछ जोड़ता है?
    क्या नया नियम उस सिद्धान्त को परिवर्तित करता है?
- शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को ढूंढे...
  - याद रखिये कि पुराने नियम की व्याख्या का मूल्य/ महत्व शाश्वत है
- प्रयोग होने योग्य को देखें...
- वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुए अनन्त सत्यों को लिखें

■ इसे अपने यहाँ लागू करें: मैं क्या करूँ?
- अनन्तकाल के सत्य पर मनन करें
- वर्तमान से अनन्त सत्य को जोड़ें
- अनन्त सत्य का अभ्यास करें
  - मुझे क्या होना चाहिए?
  - मुझे कैसे सोचना है?
  - मुझे क्या करना चाहिए?
  - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
  - मैं किसे पढ़ाऊँगा?

पुराने नियम की व्यवस्था पढ़ने का एक उदाहरण...
- लैव्यव्यवस्था 5:2-6

पुराने नियम की यात्रा
कविता

पुराने नियम की कविता पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- पुराने नियम की कविता द्वि दिशा सूचक है
  - कुछ कविताओं में हमारे लिये परमेश्वर के शब्द होते हैं
  - कुछ कविताओं में परमेश्वर के लिए हमारे शब्द होते हैं
- पुराने नियम की कविता खुले आम सच्ची है

"हे यहोवा तू मुझे क्यों छोड़ता है? तू अपना मुख मुझसे क्यों छिपाता है?" (भजनसंहिता 88:14)

पुराने नियम की कविता पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- पुराने नियम की कविता भावनात्मक है
- पुराने नियम की कविता रूपान्तरित है
- पुराने नियम की कविता परिवर्तनशील है
  - भजन संहिता, नीतिवचन, श्रेष्ठगीत, विलापगीत और भविष्यवाणी वाली पुस्तकें
  - केवल भजन संहिता भी...
    - विलाप

      व्यक्तिगत (3, 22, 31, 39, 42, 57, 71, 88, 120, 139, 142)

      सामूहिक (12, 44, 80, 94, 137)

      धन्यवादी भजन (18, 30, 32, 34, 40, 65-67, 75, 92, 107, 116, 118, 124, 136, 138)

      प्रशंसा के भजन (8, 19, 33, 103-104, 111, 113-114, 117, 145-150)

      उद्धार - इतिहास भजन (78, 105-106, 135-136)

      उल्लास तथा समर्थन के भजन (2, 18, 20-21, 24, 29, 45-48, 50, 72, 76, 81, 84, 87, 89, 93, 95-99, 101, 110, 132, 144)

      ज्ञानवर्धक भजन (36, 37, 49, 73, 112, 127, 128, 133)

      विश्वास के भजन (11, 16, 23, 27, 62, 63, 91, 121, 125, 131)

पुराने नियम की कविता को पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
  - पुराने नियम की कविता की संक्षिप्तता को देखें

    "हे यहोवा अपना मार्ग मुझे दिखला, और अपना पथ मुझे बतला दे" (भजन संहिता 25:4)

  - पुराने नियम की कविता की संरचना को देखें
    - समानता

      विषय वस्तु की दो-चार पंक्तियों द्वारा एक विचार को व्यक्त करना

      समानार्थक शब्द
  - पंक्तियों के बीच में निकटतम समानता

"यहोवा के उपदेश सिद्ध हैं हृदय को आनन्दित कर देते हैं, यहोवा की आज्ञा निर्मल है वह आँखों में ज्योति ले आती है।" (भजन संहिता 19:8)

    - विकासात्मक

दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति को विकसित करती है

"वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी न उंघेगा" (भजन संहिता 121:3)

"यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने मुझे गढ़वाले नगर में रखकर मुझ पर अद्‌भुत करुणा की है।" (भजन संहिता 31:21)

- <u>दृष्टान्तयुक्त</u>
  पहली पंक्ति विचार को व्यक्त करती है, और दूसरी पंक्ति इसे स्पष्ट करती है

"हे यहोवा प्रभु मेरे उद्धार के सामर्थ्य, तू ने युद्ध के दिन मेरे सिर की रक्षा की है।" (भजन संहिता 140:7)

- तुलनात्मक
  तुलना का प्रयोग नियोजित करती है।

"क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाएगा।" (भजन संहिता 1:6)

"बैर से झगड़े उत्पन्न होते हैं; पर प्रेम से अपराध ढँप जाते हैं।" (नीतिवचन 10:12)

- अक्षरबद्ध कविता
  कविता की प्रत्येक आने वाली पंक्ति इब्रानी वर्णमाला को अगले वर्ण से शुरु होती है।
  भजन संहिता 25, 34, 11, 112, 145
  नीतिवचन 31:10-31



- पुराने नियम की कविता में प्रतीकात्मक <u>प्रतिमावली</u> को देखें
  - उपमा

"जिस प्रकार सुअर के थूथन में सोने की नथ, उसी प्रकार वह सुन्दर स्त्री है जो विवेकहीन है।" (नीतिवचन 11:22)

"यहोवा कहता है, आओ हम आपस में वाद-विवाद करें, तुम्हारे पाप चाहे लाल रंग के हों, तौभी वह हिम के समान उजले हो जायेंगे और चाहे अर्गवानी रंग को हों तौभी वह ऊन के समान श्वेत हो जायेंगे"
(यशायाह 1:18)

- रूपक

"यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी" (भजन संहिता 23:1)

"परमेश्वर अपने पवित्र धाम में अनाथों का पिता
और विधवाओं का न्यायी है।"
(भजन संहिता 68:5)

"मन का आनन्द अच्छी औषधि है, परन्तु मन के
टूटने से हड्डियाँ सूख जाती हैं।"
(नीतिवचन 17:22)

- अप्रत्यक्ष <u>अनुरुपता</u>
  मान लीजिये, कि पाठक बिना किसी स्पष्ट निर्देश के कि इसका अर्थ क्या है, तुलना कर सकता है।

"वे मुझ पर अपने मुंह ऐसे फाड़े हुए हैं जैसे गरजने वाले और फाड़ खाने वाले सिंह हों।" (भजन संहिता 22:13)

"उसने हाथ बढ़ाकर मुझे थाम लिया, और गहरे जल में से मुझे
खींच लिया।" (भजन संहिता 18:16)

"वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा और तू उसके पैरों के नीचे शरण पायेगा,
उसकी सच्चाई तेरे लिए ढाल और झिलम ठहरेगी।"
(भजन संहिता 91:4)

- अतियोक्ति

"मेरे आँसू दिन व रात मेरा आहार हुये हैं और लोग दिन भर मुझसे
कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहाँ है?"
(भजन संहिता 42:3)

"मैंने कूट कूटकर पवन से उड़ाई हुई धूल के समान कर दिया, मैंने उनको
गली कूचों की कीचड़ के समान निकाल फेंका।"
(भजन संहिता 18:42)

"क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हूँ, मेरे अधर्म के कामों ने मुझे आ पकड़ा और मैं दृष्टि नहीं उठा सकता। वे गिनती में मेरे सिर के बालों से भी अधिक है इसलिए मेरा हृदय टूट गया है।"
(भजन संहिता 40:12)

- मानवीकरण तथा साकार रूप
  एक अस्तित्व वाली वस्तु को दूसरे प्रकार की वस्तु की विशेषताओं का श्रेय देना

"हे फाटकों अपने सिर ऊँचे करो! हे सनातन के द्वारों ऊँचे हो जाओ क्योंकि प्रतापी राजा प्रवेश करेगा।" (भजन संहिता 24:7)

"हे आकाश ऊँचे स्वर से गा क्योंकि यहोवा ने यह काम किया है। हे पृथ्वी के गहरे स्थानों, जयजयकार करो हे पहाड़ों, हे वन, के सब वृक्षों गला खोलकर ऊँचे स्वर से गाओ। क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया है और इस्राएल में महान होगा। (यशायाह 44:23)

"उनका स्वर सारी पृथ्वी पर गूँज गया है और उनके वचन जगत की छोर तक पहुँच गये हैं। उनमें उसने सूर्य के लिये एक मण्डप खड़ा किया है।" (भजन संहिता 19:4)

- कारण तथा प्रभाव

"मुझे हर्ष तथा आनन्द की बातें सुना, जिससे जो हड्डियाँ तूने तोड़ डाली हैं, वे मगन हो जायें।" (भजन संहिता 51:8)

"मूर्ख पुत्र पिता के लिये विपत्ति ठहरता है, और पत्नी के झगड़े सदा टपकने के समान हैं।" (नीतिवचन 19:13)

- प्रतिनिधित्व करना (सम्पूर्ण के लिए आंशिक)

"उसने मुझे सत्यानाश के गड़हे और दलदल की कीच से उबारा है, और मुझको चट्टान पर खड़ा किया और मेरे पैरों को दृढ़ किया।" (भजन संहिता 40:2)

- सम्बन्ध
  लेखक एक व्यक्ति को इस प्रकार से सम्बोधित करते हैं जैसे कि वह उपस्थित है, जबकि वास्तव में वह नहीं है।

"इसलिये अब हे राजाओं, बुद्धिमान बनो, हे पृथ्वी के न्यायियों, यह उपदेश ग्रहण करो।" (भजन संहिता 2:10)

"हे सब अनर्थकारियों मेरे पास से दूर हो क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है" (भजन संहिता 6:8)

"हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागा? हे यर्दन तुझे क्या हुआ कि तू उल्टी बही?" (भजन संहिता 114:5)

- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - पुराने नियम की कविता का नये नियम की एक पत्री की तरह व्याख्या नहीं करें
    - पत्रियाँ तर्क को आकर्षित करते हैं, कविता भावों को आकर्षित करती है।
    - पत्रियों में विवेकपूर्ण विवाद प्रमुख हैं, कविता में भावना प्रमुख हैं
    - वाक्य सूचना तथा व्याकरण पत्रियों में आलोचनात्मक हैं, कविता में अलंकार आलोचनात्मक हैं।
  - कविता के प्रत्येक खण्ड के लिए, एक या दो वाक्यों में सकल प्रश्न का उत्तर लिखें: "इस खंड का अर्थ क्या है?"
- इसे अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक तथा अनुकूल को देखें...
    - पुराने नियम के प्रसंग में एक आध्यात्मिक सिद्धान्त को पहचानें
    - उस सिद्धान्त को नये नियम के द्वारा निकालें
    - दो प्रमुख प्रश्न पूछें:
      क्या नया नियम इस सिद्धान्त में कुछ जोड़ता है?
      क्या नया नियम इस सिद्धान्त को परिवर्तित करता है?
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...
  - प्रयोग होने के योग्य को देखें...
  - वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुए अनन्त सत्यों को लिखें
- इसे अपने निवास में लागू करें: मैं क्या करूँ?
  - अनन्त सत्य पर मनन करें
  - अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें
    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिए?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
    - मैं किसको पढ़ाऊँगा

पुराने नियम की कविता को पढ़ने का एक उदाहरण...

- भजन संहिता 116:1-4

पुराने नियम की यात्रा
भविष्यवाणी

पुराने नियम की भविष्यवाणी पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- भयानक विषय वस्तुओं का क्या करें?

"यहोवा यों कहता है कि जिस भांति चरवाहा सिंह के मुँह से दो टांगे व कान का एक टुकड़ा छुड़ाता है, वैसे ही इस्राएली लोग जो सामरिया में बिछौने के एक कोने व रेशमी गद्दी पर बैठा करते हैं, वे भी छुड़ाए जायेंगे।" (आमोस 3:12)

- अपमानजनक विषय वस्तुओं का क्या करें?

"तू क्योंकर कह सकती है कि मैं अशुद्ध नहीं, मैं बाल देवताओं के पीछे नहीं चली? तराई में की अपनी चाल देख और जान ले कि तूने क्या किया है। तू वेग से चलने वाली और इधर-उधर फिरनेवाली सांडनी है, जंगल में पली जंगली गदही जो कामातुर होकर वायु सूंघती फिरती है, तब कौन उसे वश में कर सकता है? जितने उसको ढूँढते हैं वह व्यर्थ परिश्रम न करें, क्योंकि वे उसे उसकी ऋतु में पायेंगे।" (यिर्मयाह 2:23-24)

- निर्णायक विषय वस्तुओं का क्या करें?

"फिर यहोवा ने मुझसे कहा, यदि मूसा तथा शमूएल भी मेरे सामने खड़े होते, तौभी मेरा मन इन लोगों की ओर न फिरता। इनको मेरे सामने से निकाल दो कि वे निकल जायें। और यदि वे पूछें कि हम कहाँ निकल जायें? तो कहना कि यहोवा यों कहता है, जो मरने वाले हैं, वे मरने को चले जायें, जो तलवार से मरने वाले हैं, वे तलवार से मरने को, जो अकाल से मरने वाले हैं वह अकाल से मरने को, और जो बन्धुएँ होने वाले हैं, वे बन्धुआई में चले जायें।" (यिर्मयाह 15:1-2)

- समकालीन साहित्य में हमारे पास एक तुलनात्मक शैली नहीं है
- हम भविष्यद्वक्ताओं के बारे में अधिक नहीं <u>सुनते हैं।</u>

पुराने नियम की भविष्यवाणी पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता पुरानी वाचा को लागू कर रहे थे तथा उसकी मध्यस्थता कर रहे थे।
  - भविष्यद्वक्ता का सन्देश <u>अमौलिक</u> है
  - भविष्यद्वक्ता का सन्देश टकराव वाला है
  - भविष्यद्वक्ता का सन्देश <u>पूर्ण</u> है (लगभग 99%)
- पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के सीधे प्रतिनिधित्व थे।

पुराने नियम की भविष्यवाणी पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
  - ईश्वरीय वाणी को व्यक्तिगत रूप से देखें
  - ईश्वरीय वाणी को <u>ऐतिहासिक रुप से</u> देखें
    - 760-400 बी. सी.
    - उन वर्षों का तीन विशेषताओं द्वारा चरित्र चित्रण हुआ था:

राजनैतिक, सैन्य, आर्थिक और सामाजिक क्रांति
धार्मिक अनिष्ठा और वाचा की लापरवाही अवज्ञा
जनसंख्या तथा राष्ट्रीय सीमाओं में परिवर्तन

- निश्चित अलंकार को देखें
- निश्चित आकृति को देखें
  - मुकद्दमा
    पूर्ण मुकद्दमें में एक आहवान पत्र, एक दोषारोपण, प्रमाण और एक निर्णय होता है
    यशायाह 3...
    - पूर्ण मुकद्दमा (13-14a)
    - अभ्यारोपण (14b-16)
    - दण्ड की सजा (17-26)
- शोक
  - इसमें तीन तत्व हैं...
    - व्यथा की घोषणा (शोक)
    - व्यथा का कारण
    - विनाश का पूर्वानुमान

"क्या वे सब उसका दृष्टान्त चलाकर और उस पर ताना मारकर न कहेंगे, कि हाय उस पर जो पराया धन छीनकर धनवान हो जाता है? कब तक? हाय उस पर जो अपना घर बन्धक की वस्तुओं से भर लेता है। जो तुझसे कर्ज लेते हैं, क्या वे लोग अचानक न उठेंगे? क्या वे न जागेंगे जो तुझको संकट में डालेंगे? क्या तू उनसे लूटा न जायेगा? तूने बहुत सी जातियों को लूट लिया है, इसलिए सब बचे हुये लोग तुझे भी लूट लेंगे। इसका कारण मनुष्यों की हत्या है और वह उपद्रव भी जो तूने इस देश और राजधानी और इसके सब रहने वालों पर किया है।"
(हबक्कूक 2:6-8)

- प्रतिज्ञा
  - उद्धार की एक आकाशवाणी
    भविष्य का संकेत
    मूल परिवर्तन का उल्लेख
    आशीष की प्रतिज्ञा

"उस समय मैं दाऊद की गिरी हुई झोपड़ी को खड़ा करूँगा और उसके बाड़े के नोक को सुधारुँगा, उसके खण्डहरों को फिर बनाऊँगा और जैसा वह प्राचीन काल में था, उसको वैसा ही बना दूँगा। जिससे वे बचे हुये एदोमियों को वरन् सब जातियों को जो मेरी कहलाती है अपने अधिकार में लें– यहोवा जो यह काम पूरा करता है उसकी यही वाणी है। यहोवा की यह भी वाणी है– देखो ऐसे दिन आते हैं कि हल जोतने वाला लवने वालों को और दाख रौंदने वाला बीज बोने वाले को जा लेगा, और पहाड़ों से नया दाखमधु टपकने लगेगा और सब पहाड़ियों से बह निकलेगा। मैं अपनी प्रजा इस्राएल के बन्दियों को लौटा ले आऊँगा और वे उजड़े हुये नगरों को सुधार कर उनमें बसेंगे। वे दाख की बारियां लगाकर दाखमधु पीयेंगे और बगीचे लगाकर उनके फल खायेंगे। मैं

उन्हें, उन्हीं की भूमि में बोऊँगा और वे अपनी भूमि में से जो मैंने उन्हें दी है, फिर कभी उखाड़े न जायेंगे। परमेश्वर यहोवा का यही वचन है।" (आमोस 9:11-15)

- ➢ प्रदर्शन (चरित्र-चित्रण) की भविष्यवाणी
  - परमेश्वर सांकेतिक गतिविधियों द्वारा अपने वचन के साथ-साथ रहता है

"तब यहोवा ने कहा, कि जिस प्रकार मेरा दास यशायाह तीन वर्ष से उघाड़ा और नंगे पाँव चलता आया है, कि मिस्र तथा कूश के लिए चिन्ह हो, उसी प्रकार अश्शूर का राजा मिस्र तथा कूश के लोगों को बन्दी बना कर देश निकाल देगा। क्या लड़के, क्या बूढ़े, सभों का बन्दी बनाकर, उघाड़े और नंगे पाँव नितम्ब खुले ले जायेगा, जिससे मिस्र लज्जित हो।" (यशायाह 20:3-4)

- ➢ सन्देश-वाहक का भाषण
  - "यहोवा यह कहता है..."

- ■ उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - ➢ सोचिये <u>देववाणी</u>!
  - ➢ भविष्यसूचक आकाशवाणियों में तीन बुनियादी तत्व:
    - "तुमने वाचा को तोड़ा है, <u>पश्चाताप करो</u>!
      मूर्तिपूजा

"वे ककड़ी के खेत में खड़े पुतले के समान हैं, पर वे बोल नहीं सकती, उन्हें उठाये फिरना पड़ता है क्योंकि वे चल नहीं सकती। उनसे मत डरो, क्योंकि न तो वे कुछ बुरा कर सकती है और न कुछ भला।" (यिर्मयाह 10:5)

    - सामाजिक <u>न्याय</u>

"क्या यहोवा हजारों मेढ़ों से या तेल की लाखों नदियों से प्रसन्न होगा? क्या मैं अपने अपराध के प्रायश्चित में अपने पहिलौठे को या अपने पाप के बदले में अपने जन्माए हुये किसी को दूँ? हे मनुष्य वह तुझे बता चुका है कि अच्छा क्या है? यहोवा तुझसे इसे छोड़ कर और क्या चाहता है कि तू न्याय से काम करे, कृपा से प्रीति रखे और अपने परमेश्वर के साथ नम्रता से चले।" (मीका 6:7-8)

    - धार्मिक प्रथा

"यहोवा यह कहता है, कि तुम्हारे बहुत से मेलबलि मेरे किस काम के हैं? मैं तो मेढ़ों के होमबलियों से और पाले हुये पशुओं की चर्बी से अघा गया हूँ, मैं बछड़ों या भेड़ के बच्चों या बकरों के लहू से प्रसन्न नहीं होता। तुम जब अपना मुँह मुझे दिखाने आते हो तो तब यह कौन चाहता है कि तुम मेरे आंगनों को पांवों से रौंदो? व्यर्थ अन्नबलि फिर न लाओ, धूप से मुझे घृणा है, नये चांद तथा विश्राम दिन का मानना मुझे बुरा लगता है महासभा के साथ ही साथ अनर्थ काम करना मुझसे सहा नहीं जाता।" (यशायाह 1:11-13)

    - यदि तुम पश्चाताप नहीं करोगे तो तुम <u>न्याय</u> अनुभव करोगे
    - फिर भी तुम्हारे पास निर्णय से परे, भविष्य में <u>पुन:स्थापन</u> की आशा है
  - ➢ प्रत्येक आकाशवाणी के लिये, एक या दो वाक्यों में समस्त प्रश्न का उत्तर लिखें: इस आकाशवाणी का अर्थ क्या है?

- इसको अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक तथा अनुकूल को देखें...
    - एक आध्यात्मिक सिद्धान्त को उसके पुराने नियम के प्रसंग में पहचानें
    - उस सिद्धान्त को नये नियम द्वारा निकाल कर लायें
    - दो मुख्य प्रश्न पूछें:
      क्या नया नियम इस सिद्धान्त में कुछ जोड़ता है?
      क्या नया नियम इस सिद्धान्त को परिवर्तित करता है?
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को देखें...
  - प्रयोग होने योग्य को देखें...
  - वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्य (सत्यों) को लिखें
- इसे अपने घर में लागू करें: मैं क्या करूँ
  - अनन्त सत्य पर मनन करें
  - अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें
    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे किस प्रकार सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिए?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिये?
    - मैं किनको पढ़ाऊँगा?

पुराने नियम की भविष्यवाणी को पढ़ने का एक उदाहरण...

- यिर्मयाह 7

पुराने नियम की यात्रा
बौद्धिक साहित्य

पुराने नियम की बौद्धिक साहित्य पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- नीतिवचन, अय्यूब, सभोपदेशक, श्रेष्ठगीत
- विचारधारा को समझने में कठिनाई
- साहित्यिक पद्धति को समझना कठिन है।
- अर्थ निश्चित करने में कठिनाई

"हे मेरी प्रिय तू सुन्दर है, तेरी आँखें तेरी लटों के बीच में कबूतरों की सी दिखाई देती है, तेरे बाल उन बकरियों के झुण्ड के समान हैं जो गिलाद पहाड़ के ढाल पर लेटी हुई हों।
तेरे दान्त उन ऊन कतरी हुई भेड़ों के झुण्ड के समान हैं, जो नहाकर ऊपर आई हों,
उन में हर एक के दो-दो जुड़वा बच्चे होते हैं और उनमें से किसी का
साथी नहीं मरा।"
(श्रेष्ठगीत 4:1-2)

पुराने नियम के बौद्धिक साहित्य को पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- बौद्धिक साहित्य का उद्देश्य वचन को व्यवहारिक जीवन में लागू करने के लिए है
- बौद्धिक पुस्तकें सर्वव्यापी प्रतिज्ञाओं का एक संग्रह नहीं है।
- धार्मिक चरित्र के विकास के लिये यह पुस्तकें प्रतिबोधक तथा मार्गदर्शक हैं।

"जो मन की सुन्दरता से प्रीति रखता है और जिसके वचन मनोहर होते हैं,
राजा उसका मित्र होता है।" (नीतिवचन 22:11)

"जो लोग हाथ पर हाथ मारते और ऋणियों के उत्तरदायी होते हैं, उनमें तू न होना।
यदि भर देने के लिए तेरे पास कुछ न हो, तो वह क्यों तेरे नीचे
से खाट खींच ले।" (नीतिवचन 22:26-27)

"जब हाकिम झूठी बात की ओर कान लगाता है, तब उसके सब सेवक
दुष्ट हो जाते हैं।" (नीतिवचन 29:12)

पुराने नियम के बौद्धिक साहित्य को पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ
  - अलंकारों को ढूँढे
  - ऐतिहासिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यानपूर्वक देखें

"लम्बे चौड़े घर में झगड़ालू पत्नी से संग रहने से छत के कोने पर रहना उत्तम है।" नीतिवचन (25:24)

- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - बौद्धिक साहित्य की व्याख्या इसके विशिष्ट किताब प्रसंग के रूप में करें
  - बौद्धिक साहित्य की व्याख्या इसके सम्पूर्ण बाइबल संबंधी प्रसंग के रूप में करें
    - जीवन तक पहुँचने का आधार: तर्क-युक्त तथा सुव्यवस्थित (नीतिवचन)
    - अपवाद 1: धार्मिक का सताव (अय्यूब)

- अपवाद 2: अनन्त! अर्थ को देने के लिए तर्क-युक्त तथा सुव्यवस्थित पद्धति की विफलता (सभोपदेशक)
- अपवाद 3: एक पति व पत्नी के बीच के प्रेम में भावुक की तर्कहीनता (श्रेष्ठगीत)

➢ बौद्धिक साहित्य की प्रत्येक खंड के लिए, एक या दो वाक्यों में इस सकल प्रश्न का उत्तर लिखें: "इस खंड का अभिप्राय क्या है?"

■ इसको अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?

➢ बाइबल विषयक और अनुकूल को ढूँढें...
- एक आध्यात्मिक सिद्धान्त को इसके पुराने नियम के प्रसंग में पहचानें
- उस सिद्धान्त को नई वाचा के द्वारा निकाल कर लायें
- दो मुख्य प्रश्न पूछें:
  क्या नया नियम इस सिद्धान्त में कुछ जोड़ता है?
  क्या नया नियम इस सिद्धान्त को परिवर्तित करता है?

➢ शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को ढूँढे...

➢ प्रयोग करने योग्य को ढूँढें...

➢ वर्तमान काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुये अनन्त सत्य, (सत्यों) को लिखें

■ अपने निवास में इसे लागू करें: मैं क्या करूँ?

➢ अनन्त सत्य पर मनन करें

➢ अनन्त सत्य को वर्तमान से जोड़ें

➢ अनन्त सत्य का अभ्यास करें
- मुझे क्या होना चाहिए?
- मुझे कैसे सोचना चाहिए?
- मुझे क्या करना चाहिए?
- मुझे कहाँ जाना चाहिए?
- मैं किसको पढ़ाऊँगा?

पुराने नियम के बौद्धिक साहित्य को पढ़ने का एक उदाहरण...

■ अय्यूब 19

पुराने नियम की यात्रा

प्रकाशित

प्रकाशितवाक्य पढ़ने में कठिनाईयाँ...

- अत्यधिक विस्तृत सूचनाएं
- अत्यधिक चित्रण
- अत्यधिक गिनतियाँ
- अत्यधिक विभिन्न दृष्टिकोण!

प्रकाशितवाक्य पढ़ने के लिए सामान्य निर्देश...

- प्रकाशितवाक्य को नम्रता से देखें।
- प्रकाशितवाक्य के उपदेश के मूल पाठकों को देखें
- भविष्यक की घटनाओं का एक कालानुक्रमिक मानचित्र बनाने से बचें
- प्रकाशितवाक्य को गम्भीरता से लें, पर हमेशा शाब्दिक अर्थ से नहीं

प्रकाशितवाक्य पढ़ने के लिए व्यवहारिक प्रक्रिया...

- उनके निवास को देखें: मैं क्या देखता हूँ?
  - यूहन्ना जिनकी विशेष रूप से पहचान करता है उस दृश्य को ध्यान-पूर्वक देखें
  - विभिन्न खड़ो को संपूर्णता से देखें, हर समय हर विस्तृत वर्णन पर दबाव नहीं दें
- उनके निवास को समझें: इसका क्या अर्थ है?
  - मुख्य विचार पर केन्द्रित रहें
  - प्रत्येक खंड के लिए, एक या दो वाक्यों में इस सकल प्रश्न का उत्तर लिखें: तथ्य क्या है?
- इसे अपने निवास में लायें: यह कैसे जुड़ता है?
  - बाइबल विषयक और अनुकूल को ढूँढें...
  - शाश्वत तथा आर-पार की संस्कृति को ढूँढे
  - प्रयोग योग्य को देखें...
  - वर्तमान-काल की क्रियाओं का प्रयोग करते हुए अनन्त सत्य (सत्यों) को लिखें
- अपने निवास में इसे लागू करें: मैं क्या करूँ?
  - अनन्त सत्य पर मनन करें
  - वर्तमान से अनन्त सत्य को जोड़ें
  - अनन्त सत्य का अभ्यास करें
    - मुझे क्या होना चाहिए?
    - मुझे कैसे सोचना चाहिए?
    - मुझे क्या करना चाहिए?
    - मुझे कहाँ जाना चाहिए?
    - मैं किसको पढ़ाऊँगा?

प्रकाशितवाक्य पढ़ने का एक उदाहरण...

- प्रकाशितवाक्य 12:1-17

अब क्या?

आपने यह कर दिखाया! आपने अधिकारिक रूप से सीक्रेट चर्च समाप्त कर लिया हैं। आप मानसिक, आत्मिक तथा शारीरिक रूप से थके हुये हैं– तो पहला सुझाव है कि आप थोड़ा आराम करें। पर उसके बाद, क्या? हम जानते हैं कि यह गहन बाइबल अध्ययन एक विशेष रात्रि तक ही सीमित नहीं है। इनका प्रयोजन तो हमारे जीवनों को प्रभावित करना है, और हमारे द्वारा दूसरों के जीवनों को प्रभावित करना है। पर कहाँ से आरम्भ करें?

हमने सीक्रेट चर्च में जो सत्य देखे हैं उनको कार्यान्वित करने के लिये, नीचे सात सरल चरणों की सूची है। यह विशेषकर बाइबल अध्ययन से सम्बन्धित हैं। हमने परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने की पूर्ण आवश्यकता को देखा है, हमने इसका अध्ययन करने के लिए अपनी, परमेश्वर द्वारा दी गई, यीशु मसीह केन्द्रित तथा आत्मा से परिपूर्ण योग्यता को देखा है। आइये हम इस चीज को कार्यान्वित करें और प्रार्थना करें कि हम जैसे-जैसे उसके वचनों की सुन्दरता तथा सामर्थ्य को अनावृत्त करते हैं, वह हमें अपने साथ अधिक घनिष्ट सम्बन्ध बनाने तथा अधिक प्रभावकारी होने के लिए आकृष्ट करेगा।

चरण 1: अपने उद्देश्य निर्धारित करें

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुये कि आत्मिक उन्नति केवल एक ही रात्रि में नहीं होती है, अब समय आ गया है कि हम आत्मिक परिवर्तन की मन्द परन्तु सर्वदा सन्तोष-प्रद प्रक्रिया को सचेत करें। आरम्भ करने के लिये, इस प्रक्रिया में आगे बढ़ने के लिए, कुछ उद्देश्यों को पहचानना सहायक होगा। एक पुस्तिका लेकर उसमें नीचे लिये प्रश्नों के कुछ उत्तर लिखें:

- अब से छः महीने बाद आप आत्मिक रूप से कहाँ होना चाहते हैं? अब से एक वर्ष बाद? अब से पाँच वर्षों बाद?
- आपके आत्मिक उद्देश्यों में, बाइबल अध्ययन की क्या भूमिका है?
- क्या आप निश्चित हैं कि आपको एक नियमित आधार पर बाइबल अध्ययन की आवश्यकता है?
- वचन के अध्ययन में अपने उद्देश्यों की सफलता के लिए आप अपनी समय-सारिणी या अपने जीवन की प्राथमिकताओं के कौन-कौन से पहलुओं को पुनः व्यवस्थित करने के लिए तैयार हैं?

सोपान 2: परमेश्वर के अनुग्रह के लिए प्रार्थना करें

हम इस सोपान को लगभग निश्चित ही मान सकते हैं, पर हमें इसको शीघ्रता से पूरा करने की आवश्यकता नहीं है। अगर हम, बाइबल अध्ययन केवल एक धार्मिक कार्य पूरा करने के लिए करते हैं, तो हम आरम्भ से ही समाप्त (नाश) हो चुके हैं। बाइबल अध्ययन का प्रयोजन केवल एक माध्यम होना है, जिसके द्वारा तथा जिससे हम परमेश्वर के अनुग्रह को अनुभव करते हैं। उसका अनुग्रह ही है जो हमें वचन के द्वारा परिवर्तित करता है। तो प्रार्थना कीजिये कि परमेश्वर हमें अनुग्रह दे...

- उसके वचन की इच्छा तथा लालायित रहने के लिए प्रार्थना करें।
- वचन को अध्ययन करने के लिए अपनी समय-सारिणी को उत्तम प्रकार से संतुलित करने के लिए प्रार्थना करें।
- उसके वचन के ज्ञान में बढ़ने के लिए प्रार्थना करें।
- उसके वचन को अपना समय देने के परिणाम-स्वरूप, उसको आपसे अधिक प्रेम करने के लिए प्रार्थना करें।

चरण 3: एक योजना बनायें

निस्संदेह, उसके अनुग्रह से अब पूरी तरह संलग्न होने का समय आ गया है। जैसा कि हम देख चुके हैं कि वचन का अध्ययन अपने आपसे प्रतिदिन नहीं होता है। इसमें समय और मेहनत लगती है। यह योजनानुसार होता है। इसलिये, हमारे लिये ऐसा सभिप्राय योजना बनाना अनिवार्य है जो यह दिखाये कि बाइबल अध्ययन हमारे जीवनों में किस प्रकार दिखाई देता है। ठीक उसी प्रकार से जैसे हम एक दिन में भोजन खाने की योजना बनाते हैं, जैसे हम अपने कार्य-स्थल में जाने की योजना बनाते हैं, या जैसे हम अपने बच्चों की देख-भाल करने की योजना बनाते हैं, उसी प्रकार से हम परमेश्वर के वचन द्वारा उसको जानने की योजना बनाते हैं। वचन का सभिप्राय अध्ययन करने के लिये नीचे दी गई सहायक दिशा-निर्देशों का प्रयोग करें:

- एक स्थान तथा समय निर्धारित करें। स्थिरता यहाँ अधिक जरूरी है। वचन के अध्ययन के लिए आपके पास सबसे अधिक प्रभावकारी स्थान और प्रभावकारी समय कहाँ और कब है?
- एक प्रारम्भिक बिन्दु निर्धारित करें। वचन के गहन अध्ययन में अगर आप नये हैं तो, अपनी अभिलाषा को, आपको तुरन्त समाप्ति की ओर ने भेजने दें। यह आवश्यक नहीं है कि आप यिर्मयाह या लैव्यव्यवस्था से ही शुरु करें। नये नियम की एक सरल पत्रिका जैसे याकूब या फिलिप्पियों से शुरु क्यों नहीं करते? ये छोटी हैं, एक ही बार में यह एक साथ पढ़ी जा सकती हैं, और फिर अध्ययन के लिए, आसानी से अनुच्छेदों में बंटी हैं। या फिर आप कोई एक सुसमाचार भी ले सकते हैं– शायद मत्ती या यूहन्ना– आप जो भी निर्णय करें, आरम्भ में इसे सरल ही रखें।
- एक तरीका निर्धारित करें। जब आप वचन का अध्ययन करने बैठ जाते हैं, तो आप क्या करेंगे? यह याद रखिये कि बाइबल अध्ययन करते समय आपके पास एक पुस्तिका और एक पैन / पैन्सिल होनी चाहिये। आप यह सोचेंगे कि मेरे पास तो लिखने को कुछ भी नहीं है? इसके विपरीत, यह चीज जिस प्रकार से कार्य करती है, वही उसकी सुन्दरता है। पवित्र-आत्मा आपको, लिखने के लिए कुछ देने वाला है। आप, जैसे-जैसे वचन को पढ़ते हैं और वह अध्ययन के द्वारा इसे समझने के लिये आपकी आँखें खोलता है, वैसे-वैसे ही वह स्वयं को आपके सामने उन तरीकों से प्रकट करेगा, जिनकी आपने पहले आशा भी नहीं की होगी। तो आप अपनी पुस्तिका, पैन / पैन्सिल तैयार रख लें। एक बार जब आप यह निश्चित कर चुके हैं कि आप क्या पढ़ने जा रहे हैं, तो उस विशिष्ट शैली के लिये सीक्रेट चर्च द्वारा दी गई दिशा-निर्देशकों का प्रयोग करें और प्रक्रिया में धीरे-धीरे चलना आरम्भ करें। अगर आप चाहते हैं, तो बाइबल अध्ययन की अभ्यास पुस्तिका ले लें और हर दिन या हर सप्ताह अपने अध्ययन की सहायता के लिए इसे प्रयोग करें। चाहे आप इन अभ्यास पुस्तिकाओं या अन्य और किसी चीज का प्रयोग करें या न करें, पर जब भी आप पढ़ने तथा अध्ययन के लिए बैठते हैं तो एक नित्य-कर्म निर्धारित कर लें। और इस बात को निश्चित कर लें कि उस नित्य-कर्म में, विषय-वस्तु का आपका प्रतिबिम्ब शामिल हो। आप विषय-वस्तु के प्रकाश में प्रार्थना करें और उससे जो भी सीखते हैं उसे लिखें।

चरण 4: वचन का अध्ययन करें

अब आप तैयार हैं। आपके पास समय है और एक स्थान है। आपके पास आरम्भ करने के लिए कोई बिन्दु है और आपने एक तरीका बनाया है। अब, इसका परिपालन करने का समय है। बाइबल अध्ययन के बारे में, सीक्रेट चर्च के आरम्भ से, कुछ स्मरण-पत्रों की सूची नीचे दी गई है। वचन के अध्ययन करते समय आप जब विभिन्न चुनौतियों का सामना करते हैं, तो आप अपने सीक्रेट चर्च की टिप्पणियों को दो बार देखें, शायद आपके लिये यह सहायक हों...

- प्रार्थना से बाइबल अध्ययन करें

- हम कभी भी अकेले बाइबल अध्ययन नहीं करते हैं

- नम्रता से बाइबल अध्ययन करें
  - क्या वास्तव में आप उसे जानना चाहते हैं?
- ध्यान-पूर्वक बाइबल अध्ययन करें
  - हम विषय-वस्तु को ठीक से समझना चाहते हैं
- आनन्द-पूर्वक
  - बाइबल अध्ययन में व्यक्तिगत खोज का रोमांच है
- सरलता से बाइबल अध्ययन करें
  - आप, बाइबल और पवित्र-आत्मा...
- विश्वास से बाइबल अध्ययन करें
  - पवित्र-आत्मा आप में है जो आपको यह करने के लिए सक्षम बनाता है
- स्थिरता से बाइबल अध्ययन करें
  - हमें हर पुस्तक का हर लेख पढ़ने के लिए तैयार होना है
- परिश्रम-पूर्वक बाइबल अध्ययन करें
  - बाइबल अध्ययन का सीखना एक ही रात्रि में नहीं होगा
- सुविचारित रूप से बाइबल अध्ययन करें
  - हमेशा एक पुस्तिका तथा पैन / पैन्सिल साथ लेकर अध्ययन करें
- व्यक्तिगत रूप से बाइबल अध्ययन करें
  - आप इस पुस्तक के लेखक से प्रेम करने लगेंगे
  - आपको इस पुस्तक को आधिपत्य के नीचे सच्चा जीवन मिलेगा

चरण 5: एक छोटे समूह को खोजें

आप जब उचित प्रकार से बाइबल अध्ययन करना आरम्भ कर देते हैं, तो आप स्वयं से यह प्रश्न पूछने लग जाते हैं, "मैं, दूसरों को शिक्षित करने के द्वारा किस प्रकार से इसको अपने पर लागू कर सकता हूँ?" मैं वचन में अपने समय, को किस प्रकार से सभी राज्यों में शिष्य बनाने के लिए प्रयोग कर सकता हूँ? वचन का यही उद्देश्य है– दूसरों को जीवनों में सम्मिलित करने के लिये ही यह हमें तैयार करता है। इसलिये, अकेले में बाइबल अध्ययन करने का अर्थ है कि हम परमेश्वर के वचन के लिए उसकी योजना के मुख्य तर्क को समझने से चूक जाते हैं। वह चाहता है कि आप उसके सिखाये गये उपदेशों को दूसरों के साथ बाँटने में सक्षम बनें। यदि हम केवल इसमें ओत-प्रोत ही होते हैं, और हम कभी इसको दूसरों पर नहीं उंडेलते हैं तो हम परमेश्वर के वचन के प्रति एक आत्म-केन्द्रित दृष्टिकोण अपना रहे हैं– हमेशा लेना ही परन्तु देना कभी नहीं।

इसको इस प्रकार से सोचें। अगर परमेश्वर अपने वचन में, किसी दूसरे के निमित्त आप पर चीजें प्रकट करता है तो क्या होगा? अगर आपके समुदाय में कोई व्यक्ति ऐसा है जिसे अपने जीवन को किसी विशिष्ट क्षेत्र में परमेश्वर के वचन को सुनने की आवश्यकता है, और परमेश्वर ने वह वचन आपके हृदय में रखना चुना है तो क्या होगा? आप पूछते हैं, "अरे! परमेश्वर उनको ही क्यों नहीं बता देता?" इसका उत्तर है–, "वह आपको अपने कार्य में सम्मिलित करने के लिए प्रेम करता है।" (व्यवस्थाविवरण 4:5-6) इसीलिये उसने हमें इसे दिया है। तो, अगर आप किसी छोटे समूह में नहीं हैं, जहाँ प्रताप बाइबल अध्ययन कर सके, तो परमेश्वर ने जो दूसरे लोगों के जीवन में कर रहा है, उसमें शामिल हो जायें। और इसके साथ ही साथ, परमेश्वर का उसे, आपके अपने आत्मिक परिवर्तन के लिये प्रयोग करने दें।

चरण 6: गहराई में जायें

इसके बारे में हम सीक्रेट चर्च में बात कर चुके हैं कि यह एक अनिवार्य चरण नहीं है। आप स्वयं, पवित्र-आत्मा तथा वचन के साथ भी बाइबल अध्ययन कर सकते हैं। फिर भी बाइबल के छात्रों के लिये बहुत अधिक संसाधन उपलब्ध है, और केवल बहुत थोड़े तथा सरल संसाधन ही, आपका वचन का ज्ञान बढ़ाने में लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। थोड़े से संसाधनों की विभिन्न श्रेणियों की सूची नीचे दी जा रही है। इनमें से कई तो सीक्रेट चर्च की तैयारी में प्रयोग किये गये थे। जब आप वचन का अध्ययन करेंगे, तब आप उसमें और गहराई से जाना चाहेंगे, और इस प्रकार के संसाधन बहुत ही सहायक होंगे...

- **हाऊ टू स्टडी बाइबल**
  - जे. स्काट ड्यूवाल तथा जे. डैनियल हयेस– ग्रासपिंग गौड्स वर्ड (जोनडर्वन)
  - गोरडन फी एण्ड डग्लस स्टूआर्ट,– हाऊ टू रीड बाइबल फॉर ऑल इट्स वर्थ (जोनडर्वन)
  - हावर्ड जी. हैनड्रीक्स एण्ड विलियम डी. हैन्ड्रीक्स- लिविंग बाइ द बुक (मूडी)
  - के आर्थर, हाऊ टू स्टडी योर बाइबल (हार्वेस्ट हाऊस)
- **बाइबल हैण्डबुक**
  - डेविड डॉकरी- द हीलमैन बाइबल हैण्डबुक (हौलमैन)
- **बाइबल डिक्शनरी**
  - आई. हावर्ड मार्शल, ए. आर. मिलर्ड, जे. आई. पैकट एण्ड डी. जे. वाइसमैन- न्यू बाइबल डिक्शनरी (इन्टर वारसिटी प्रैस)
  - ब्रायन एस. रोजनर, टी. डैसमण्ड अैलेक्ज़ैण्डर, कार्सन गोल्ड्सवर्थी- न्यू डिक्शनरी ऑफ बिब्लिकल थियोलॉजी (इन्टर वारसिटी प्रैस)
- **ओल्ड टैस्टामेन्ट इन्ट्रोडक्शन**
  - रेमण्ड डिलार्ड एण्ड ट्रैम्पर लौंगमैन- एन इन्ट्रोडकशन टू द ओल्ड टैस्टामैन्ट (जोनवर्डन)
- **न्यू टैस्टामैन्ट इन्ट्रोडक्शन**
  - डी. ए. कार्सन एण्ड डगलस जे. मू– एन डन्ट्रोडक्शन टू द न्यू टैस्टामैन्ट (जोनवर्डन)
- **वर्क स्टडीज़**
  - एडवर्ड गुडरिक एण्ड जॉन कोल्हनबर्गर III ईड्स, जोनवर्डन एन. आई. वी. एक्जहौजटिव कौनकार्डेन्स (जौनवर्डन)
  - डब्ल्यू. ई. वाइन. एम. एफ. उंगेर, और डब्ल्यू. व्हाईट, जूनियर एडी, वाईनस कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामैन्ट वर्डस (थॉमस ए. नैल्सेन)
- **बाइबल एटलस**
  - थॉमस ब्रिसको, हौलमैन बाइबल एटलस (हौलमैन)
- **बाइबल कमैन्ट्री सीरीज**
  - लोगोस बाइबल सॉफ्टवेयर (डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.लोगोस.कौम)
  - एक्सपोसिटटस् बाइबल कॉमेन्ट्री (जौनवर्डन), सी.डी. पर उपलब्ध

- जी. जे. वैन्हम, जे. ए. मौटयर, डी. ए. कारसन एण्ड आर. टी. फ्रान्स, न्यू बाइबल कमैन्ट्री (इन्टर वारसिटी प्रैस) सी.डी. पर उपलब्ध
- वारेन व्रिस्बी - द बाइबल एक्सपोसिशन कमैन्ट्री (चैरिअट विक्टर पब्लिशिंग) सी. डी. पर उपलब्ध

■ **इन्टरनैट हैल्प**

- डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.बिब्लिकलट्रेनिंग.ओआरजी
- डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.बाइबलगेटवे.कॉम
- डब्ल्यू.डब्ल्यू.डब्ल्यू.क्रोसवॉक.कॉम

चरण 7: इसको बनाये रखें

तो, आप यहाँ तक पहुँच गये हैं, पर इसकी सुन्दरता है- कि यात्रा तो अब आरम्भ हो रही है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि आप जीवन भर इस सृष्टि के परमेश्वर के साथ, उसके वचन के द्वारा चलेंगे? यह यात्रा इस योग्य हे। पुराने नियम में मेरा एक पसन्दीदा पात्र हनोक है। उत्पत्ति के अध्याय 5 में इसके बारे में ज्यादा नहीं कहा गया है, पर जितना भी कहा गया है वह बहुत मुख्य है। बहुत सरलता से बाइबल कहती है, "हनोक यहोवा के साथ चलता था।" हनोक का जीवन ऐसा था। वह परमेश्वर के साथ चलता था। पर जब आप इसके बारे में सोचें– तो कौन से जीवन की तुला उसके साथ कर सकते हैं? काश, परमेश्वर हमें अपने साथ चलने का सरल, रोमांचक, पूरी तरह हावी होने वाले शाश्वत आनन्द को जानने के लिए अनुग्रह दें।

जब आप वचन का अध्ययन करते हैं, तो आप इसके बहुमूल्य कोष में जो उसने आपके लिए संग्रह किया है, गहनता से उतर जायें। जब जीवन व्यस्त हो जाता है और मांगे बढ़ती जाती हैं, तब लड़खड़ाने वाली परीक्षा का विरोध करें। बाइबल अध्ययन का प्रयोजन एक महान स्वतन्त्रता, महान शांति और महान आनन्द देना है, जब हम प्रतिदिन उसके साथ चलने के सौभाग्य को अनुभव करते हैं, उसकी आवाज सुनते हैं, संसार के लिये उसके हृदय के भावों को महसूस करते हैं और अपने जीवन में उसकी इच्छा का अनुभव करते हैं। आगे की यात्रा को जारी रखने के लिए परमेश्वर हमें अनुग्रह देता रहे और उसके वचन का हमारे जीवन में कार्यान्वित होने से उसे महिमा प्राप्त हो।